मानिला वाणी

मासिक ई-पत्रिका

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार,
मानिला- 263 667 (अल्मोड़ा)

अंक- 07 । 2025-26

उन्नति

मार्च, 2026

विवरणिका इस अंक में...

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	सम्पादक की कलम से...	i
2.	छात्र-छात्रा लेख अनुभाग	1-2
3.	प्राध्यापक लेख अनुभाग	3-15
4.	समसामयिकी	16-17
5.	मार्च माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ	18-19
6.	मार्च माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व (एक जीवन परिचय)	20-27
7.	मार्च माह के महत्वपूर्ण दिवस	28-31
8.	चित्र दीर्घा	32-34
9.	कलाकृति अनुभाग	35-36
10.	कुछ अनुशंसित पुस्तकें	37
11.	देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य	38-39
12.	रोजगार समाचार	40

संपादकीय

"निरंतरता ही उन्नति का मूल मंत्र है।"

मार्च माह न केवल उत्तराखण्ड की पहाड़ियों में बुरांश की लालिमा और बसंत के आगमन का प्रतीक है, बल्कि यह हमारे महाविद्यालय के लिए भी एक *'उन्नति'* का उत्सव लेकर आया है। इस अंक का मुख्य विषय 'उन्नति' चुनने का हमारा उद्देश्य केवल अकादमिक प्रगति को दर्शाना नहीं, बल्कि उस सर्वांगीण विकास को रेखांकित करना है जो हमने बीते कुछ महीनों में सामूहिक रूप से हासिल किया है।

इस सत्र में हमारा परिसर गतिविधियों की जीवंत ऊर्जा से सराबोर रहा। वार्षिकोत्सव के मंच पर जहाँ छात्र-छात्राओं की कलात्मक प्रतिभा ने नई ऊंचाइयों को छुआ एवं महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अक्षरा' का विमोचन हुआ, वहीं राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर ने हमें समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी और सेवा भाव का पाठ पढ़ाया। गाँव की पगडंडियों पर श्रमदान करते हमारे स्वयंसेवियों ने यह सिद्ध किया कि वास्तविक उन्नति वही है जो समाज के अंतिम व्यक्ति को छूकर गुजरे।

ज्ञान केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं होता, और इसी विचार को चरितार्थ किया है शिक्षक एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमणों ने। उच्च अकादमिक संस्थानों के दर्शन ने उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाया है। ये यात्राएं केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव का एक समृद्ध स्रोत रही हैं।

शिक्षा, खेल, संस्कृति और समाज सेवा—इन सभी क्षेत्रों में हमारे विद्यार्थियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन इस बात का प्रमाण है कि हमारा संस्थान 'उन्नति' के सही मार्ग पर अग्रसर है। 'उन्नति' कोई मंजिल नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाली यात्रा है। हमें विश्वास है कि यह अंक हमारी इन उपलब्धियों का आईना बनेगा और आप सभी को भविष्य में और अधिक बेहतर करने की प्रेरणा देगा।

संपादकीय समिति:

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद (प्रधान सम्पादक)

डॉ० शैफाली सक्सेना (सह-सम्पादक)

छात्र-छात्रा

लेख अनुभाग

हाशिये की ओर जाते हुए नैतिक मूल्य

मूल्य ही किसी नैतिक मूल्य मानव जीवन के प्रमुख तत्व होते हैं। नैतिक किसी व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हैं व समाज में उसकी गरिमा बनाते हैं। प्रमुख नैतिक मूल्य जैसे- ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, सहानुभूति, दूसरों के प्रति प्रेम व सम्मान आदि, व्यक्ति को समाज में सम्मान प्रदान कराते हैं व उसे एक आदर्श व्यक्ति के रूप में सुशोभित करते हैं, किन्तु वर्तमान समय में इनका पतन होता जा रहा है।

आज के युवाओं व व्यक्तियों में नैतिक मूल्यों का इस ह्रास एक प्रमुख व शोचनीय विषय बना हुआ है। आज के समाज में सफलता को केवल धन व प्रतिष्ठा से जोड़ा जाने लगा है। हर व्यक्ति त्वरित गति से धन पाने की होड़ में सही-गलत के फरक को भूलता जा रहा है।

आज का आधुनिक समाज विज्ञान व तकनीक में तो बहुत आगे निकाल चुका है तथा समस्त सुख-सुविधाओं ने मानव जीवन को आसान बना दिया है, किन्तु इन सुख-सुविधाओं पर ही व्यक्ति का पूरा ध्यान चल गया है। नैतिक मूल्यों में ह्रास के पीछे कई कारण जिम्मेदार हैं, जिनमें समाज में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, अव्यावहारिक शिक्षा, सोशल मीडिया का गलत प्रभाव आदि सबसे प्रमुख कारण है।

नैतिक मूल्यों की शुरुआत बाल्यावस्था से ही शुरू हो जाती है। शिशु जिस परवरिश में पलता-बढ़ता है, वह वैसे ही मूल्यों को ग्रहण करता है। आज के अभिभावकों का ध्यान केवल अपने बच्चों के करियर पर रहने लगा है। वे जैसे बच्चों को एक वस्तु के रूप में देखते हैं, जिनका लक्ष्य केवल धन-संपदा प्राप्त करना है।। वे अपने शिशु को व्यावहारिक शिक्षा व नैतिक मूल्यों का ज्ञान देना भूल सा गए हैं। यही प्रमुख कारण है कि समाज अनैतिक होता जा रहा है, क्योंकि समाज की नींव ही गलत पद रही है।

नैतिक मूल्यों के पतन के कारण समाज में अव्यवस्था सी आ गई है। समाज झूठ-फरेब की जंजीरों से जकड़ सा गया है। धोखाधड़ी, बेईमानी, घृणा जैसे तत्व बढ़ते जा रहे हैं। यदि नैतिक मूल्यों की यही स्थिति रही तो लोगों में अविश्वास, अपराध, भ्रष्टाचार, असम्मान जैसे विकार बढ़ते जाएंगे और समाज पूर्ण रूप से भ्रष्ट हो जाएगा।

अतः हमारा यह प्रयास व पूर्ण जिम्मेदारी होनी चाहिए कि हम पहले तो स्वयं नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दें व समाज के समस्त व्यक्तियों में इनका संचार कर समाज को सभ्य बनाने में अपना योगदान दें। तभी एक पूर्ण रूप से विकसित व सभ्य समाज की स्थापना हो पाएगी।

तनुजा शर्मा
बी०ए० चतुर्थ सेमे०

उड़ान

किताबों के पन्ने, सपनों के नाम,

मेहनत की सुबह, उम्मीद की शाम।

हाथों में कलम, आँखों में नूर,

मंज़िल नहीं अब हमसे दूर।

विज्ञान की खोज, कला का श्रृंगार,

सीखने का मन में सच्चा प्यार।

हम कल के सूरज, नई है राह,

आसमां छूने की दिल में है चाह।

शिवानी
बी०एस-सी० षष्ठम सेमे०

सोच की लहर

एक हाथ में कलम, दूजे में परखनली,

खुल रही है ज्ञान की हर एक कली।

कला के रंगों में डूबा है जहान,

विज्ञान से छू रहे हैं हम आसमान।

तर्कों की दुनिया, ख्यालों का मेल,

जीवन है एक सीखने का खेल।

लाइब्रेरी की शांति, लैब का शोर,

खिंच रहा है कल हमारी ओर।

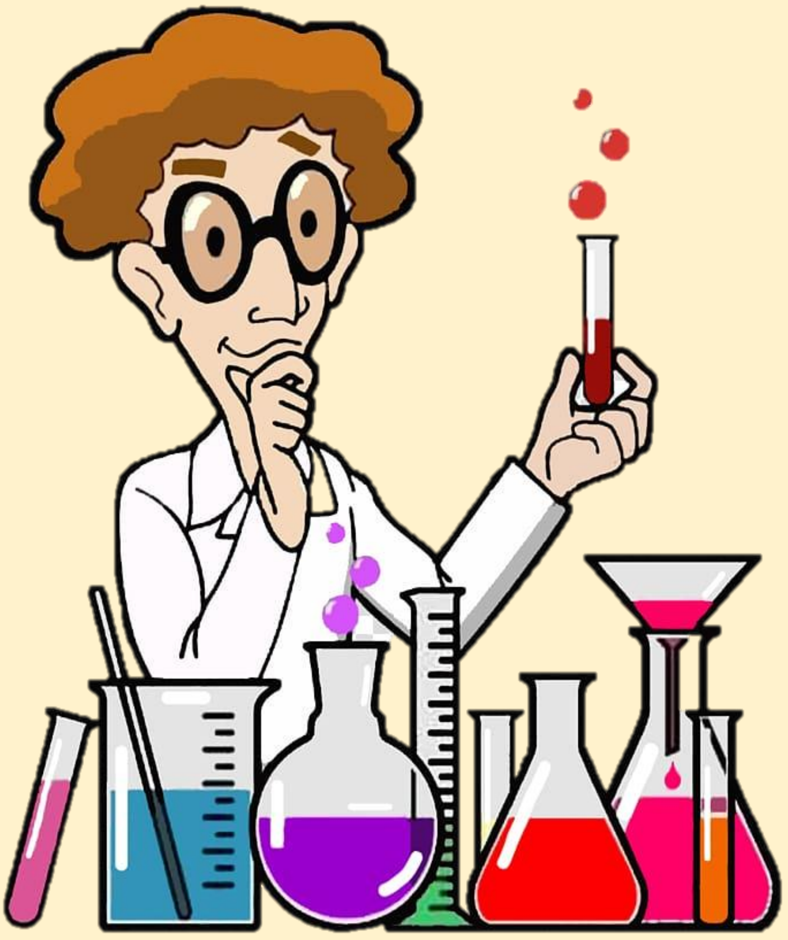

मीनू
बी०एस-सी० षष्ठम सेमे०

प्राध्यापक

लेख अनुभाग

डिग्री के बाद भी संघर्ष

बदलते जॉब मार्केट की चुनौती

डॉ० गोरख नाथ
असिस्टेंट प्रोफेसर
अर्थशास्त्र विभाग

आज के समय में शिक्षा को सफलता की कुंजी माना जाता है। हर छात्र यह सपना लेकर पढ़ाई करता है कि उच्च डिग्री प्राप्तकरने के बाद उसे एक अच्छी और स्थिर नौकरी मिलेगी। लेकिन वर्तमान परिदृश्य में यह धारणा धीरे-धीरे बदलती नजर आ रही है। आज लाखों युवा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद रोजगार के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह स्थिति न केवल व्यक्तिगत स्तर पर चिंता का विषय है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी गंभीर चुनौती बनती जा रही है।

सबसे पहले, यह समझना आवश्यक है कि जॉब मार्केट तेजी से बदल रहा है। पहले जहां केवल डिग्री को ही नौकरी का आधार माना जाता था, वहीं अब कंपनियाँ व्यावहारिक कौशल (Practical Skills), अनुभव और नवाचार (Innovation) को अधिक महत्व देती हैं। केवल सैद्धांतिक ज्ञान रखने वाले उम्मीदवारों को अक्सर नौकरी पाने में कठिनाई होती है। यही कारण है कि कई उच्च शिक्षित युवा इंटरव्यू में असफल हो जाते हैं।

दूसरा प्रमुख कारण शिक्षा प्रणाली और उद्योग की आवश्यकताओं के बीच का अंतर है। हमारे देश में अधिकांश पाठ्यक्रम पुराने ढांचे पर आधारित हैं, जो वर्तमान उद्योग की जरूरतों के अनुरूप नहीं हैं। परिणामस्वरूप, छात्र डिग्री तो प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन उनके पास वह कौशल नहीं होता जो कंपनियाँ चाहती हैं। इस स्थिति को "स्किल गैप" कहा जाता है।

तीसरा कारण है प्रतिस्पर्धा में अत्यधिक वृद्धि। आज हर साल लाखों छात्र ग्रेजुएशन और पोस्ट-ग्रेजुएशन की डिग्रियाँ लेकर निकलते हैं, जबकि रोजगार के अवसर उसी अनुपात में नहीं बढ़ रहे हैं। इससे नौकरी के लिए प्रतिस्पर्धा बहुत अधिक हो जाती है, और इसके अलावा, तकनीकी विकास (Technology Advancement) ने भी जॉब मार्केट को प्रभावित किया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑटोमेशन और डिजिटल तकनीकों के कारण कई पारंपरिक नौकरियाँ समाप्त हो रही हैं, जबकि नई नौकरियों के लिए विशेष तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है। जो युवा इन बदलावों के साथ खुद को नहीं ढाल पाते, उन्हें संघर्ष करना पड़ता है।

इस समस्या का समाधान केवल डिग्री प्राप्त करने में नहीं, बल्कि कौशल विकास में निहित है। छात्रों को चाहिए कि वे अपनी पढ़ाई के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें, जैसे इंटर्नशिप, प्रोजेक्ट वर्क और नई तकनीकों का ज्ञान। इसके साथ ही, शिक्षा प्रणाली में भी सुधार की आवश्यकता है, ताकि पाठ्यक्रम को उद्योग की मांग के अनुसार बनाया जा सके।

अंततः यह कहा जा सकता है कि आज के समय में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं है। सफलता पाने के लिए निरंतर सीखना, स्वयं को अपडेट रखना और कौशल विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। बदलते जॉब मार्केट में वही युवा आगे बढ़ पाएंगे, जो समय के साथ खुद को ढालने की क्षमता रखते हैं।

निष्कर्षतः डिग्री के बाद संघर्ष की यह स्थिति हमें यह सिखाती है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल प्रमाण-पत्र प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन में उपयोगी कौशल और ज्ञान अर्जित करना होना चाहिए।

फूलदेई

फूलों का वह पर्व जो कुमाऊँ की आत्मा में बोलता है

डॉ० कविन्द्र भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर
अंग्रेजी विभाग

मार्च का महीना है। अल्मोड़ा के आसपास की पहाड़ी ढलानों पर अभी ठंड की अंतिम साँसें चल रही हैं, लेकिन पहाड़ की फ़िज़ा में कुछ बदल रहा है। बुराँश के लाल फूल चट्टानों के बीच से झाँकने लगे हैं। सरसों के पीले खेत दूर तक फैले हैं। आड़ू और खुबानी के पेड़ों पर गुलाबी बहार आ गई है। और फिर एक सुबह, भोर की पहली रोशनी के साथ, किसी गाँव के रास्ते से एक मीठी आवाज़ उठती है। छोटे-छोटे बच्चों की टोलियाँ रिंगाल की टोकरियाँ उठाए, दरवाजे-दरवाजे जा रही हैं और गा रही हैं:

"फूलदेई छम्मा देई, दैणी द्वार भर भकार। यो देली कैं बारंबार नमस्कार, फूले द्वार, फूलदेई।"

यह फूल देई है। कुमाऊँ का सबसे कोमल, सबसे निर्मल और शायद सबसे पुराना लोकपर्व। फूल देई दो शब्दों से बना है। "फूल" यानी पुष्प, और "देई" का अर्थ है अर्पित करना, चढ़ाना। लेकिन "देई" का एक और अर्थ भी है। यह उस विशेष पारंपरिक पकवान का नाम भी है जो इस पर्व पर बनाया जाता है, जिसे "सई" या "सेई" भी कहते हैं, चावल के आटे, दही और गुड़ से बनाई जाने वाली एक मीठी पुडिंग। तो फूल देई का पूरा भाव है: फूलों और मिठास के साथ प्रकृति को, देवताओं को और पड़ोसियों को शुभकामनाएँ अर्पित करना। इस पर्व को अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। कुमाऊँ में "फूलदेई", गढ़वाल में "फुलारी", उत्तरकाशी में "फूल्यात" और जौनसार में "गोगा"। लेकिन पर्व की आत्मा एक ही है: वसंत का स्वागत, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, और समुदाय की साझी प्रार्थना।

यह पर्व हिंदू सौर पंचांग के अनुसार चैत्र मास के पहले दिन, यानी मीन संक्रांति को मनाया जाता है, जो ग्रेगोरियन कैलेंडर में प्रायः 14 या 15 मार्च को पड़ता है। इस वर्ष 2026 में यह 14 मार्च को मनाया गया। यह दिन कुमाऊँ के पहाड़ी अंचल में नव वर्ष का पहला दिन माना जाता है। पहाड़ के लोग सौर कैलेंडर का उपयोग करते हैं इसलिए उनका नया साल मीन संक्रांति से, अर्थात फूल देई से शुरू होता है। इसलिए यह केवल फूलों का उत्सव नहीं है। यह नव वर्ष का स्वागत है, नई कृषि ऋतु का शुभारंभ है, और पूरे गाँव की एक साझा प्रार्थना है कि आने वाला साल सुख, समृद्धि और अच्छी फसल लेकर आए। कुमाऊँ का जीवन सदा से कृषि और प्रकृति के इर्द-गिर्द बुना हुआ रहा है। जब शीत ऋतु समाप्त होती है और धरती फिर से हरी-भरी होने लगती है, तो यह किसान परिवारों के लिए केवल मौसम का बदलाव नहीं होता, यह उम्मीद का मौसम होता है।

फूल देई की सबसे सुंदर विशेषता यह है कि इसके केंद्र में बच्चे हैं। इसीलिए इसे "लोक बाल पर्व" भी कहते हैं। जहाँ अधिकांश पर्वों में बड़े-बुजुर्ग अनुष्ठान करते हैं और बच्चे दर्शक मात्र होते हैं, वहाँ फूल देई में बच्चे ही याजक हैं, बच्चे ही दूत हैं। उन्हें "फुलारी" कहा जाता है। इन बच्चों में छोटी लड़कियाँ विशेष रूप से उत्साह से भाग लेती हैं। वे भोर होने से पहले ही उठ जाती हैं। जंगलों और खेतों की ओर जाती हैं और फ्यूँली, बुराँश, बालिंग और कचनार जैसे ताजे खिले जंगली फूल चुनकर लाती हैं। रिंगाल यानी पहाड़ी बाँस की टोकरियाँ या थालियाँ सजाती हैं। फिर दल बनाकर गाँव के हर घर के दरवाजे पर जाती हैं। हर घर की देहरी पर वे फूल, चावल और थोड़ी हल्दी बिखेरती हैं और साथ में गुड़ व सिक्के भी चढ़ाती हैं। देहरी यानी दरवाजे की दहलीज कुमाऊँनी घरों में बेहद पवित्र मानी जाती है, यह घर और बाहर की दुनिया के बीच की सीमा है, जहाँ फूल चढ़ाना सुरक्षा और शुभता का प्रतीक है। घर की गृहणियाँ बच्चों का स्वागत करती हैं और उनकी टोकरी में गुड़, चावल और पैसे डालकर उन्हें स्नेहपूर्वक दक्षिणा देती हैं। यह लेन-देन केवल भेंट नहीं है, यह पीढ़ियों के बीच का संवाद है, गाँव की एकता का प्रतीक है।

फूल देई के गीत इस पर्व की जान हैं। जब बच्चे ये गीत गाते हुए गाँव में निकलते हैं, तो कुमाऊँनी बोली एक ऐसे जीवंत रूप में सुनाई देती है जो किसी पाठ्यपुस्तक में नहीं मिलता। कुमाऊँ में सबसे अधिक गाई जाने वाली पंक्तियाँ हैं: "फूलदेई छम्मा देई, दैणी द्वार भर भकार, यो देली कैं बारंबार नमस्कार, फूले द्वार।" इसका भाव है कि जिस घर की देहरी पर फूल चढ़ाए जा रहे हैं, वह घर अन्न और समृद्धि से हमेशा भरा रहे। एक अन्य प्रचलित रूप में बच्चे गाते हैं: "फूलदेई, छम्मा देई, जतुक देला, उतुक सही," अर्थात जो कुछ भी आप हमें देंगे, हम प्रसन्नता से स्वीकार करेंगे। ये गीत कुमाऊँनी लोकसाहित्य की उस समृद्ध परंपरा की कड़ी हैं जिसमें न्यौली, चाँचरी, झोड़ा और फाग जैसी विधाएँ सम्मिलित हैं। यह सब मौखिक रूप से माँ से बेटी को, दादी से पोती को मिलता आया है। जब एक बच्ची यह गीत गाती है, तो वह अनजाने में ही सही, अपनी माँ की, अपनी दादी की और उनसे भी पहले की स्त्रियों की आवाज़ को आगे ले जाती है।

इस पर्व में जो फूल इस्तेमाल होते हैं वे भी खास हैं और कुमाऊँ के पर्यावरण से गहरे जुड़े हुए हैं। बुराँश उत्तराखंड का राज्य वृक्ष है, इसके लाल फूल मार्च में खिलते हैं और पहाड़ी ढलानों को जैसे आग लगा देते हैं, इसका रस औषधीय भी माना जाता है। फ्यूँली या पियोली एक छोटा पीला फूल होता है जो चट्टानों और ढलानों पर उगता है और फूल देई का सबसे प्रतीकात्मक फूल है। बालिंग, कचनार, आड़ू और खुबानी के फूल भी कुमाऊँ की घाटियों को इस ऋतु में रंगीन कर देते हैं। इस तरह यह त्योहार बच्चों को प्रकृति से जोड़ने का एक स्वाभाविक माध्यम बन जाता है। जंगल जाना, फूल पहचानना, मौसम को समझना, यह सब जीवित ज्ञान की परंपरा है जो फूल देई के माध्यम से अगली पीढ़ी तक पहुँचती है।

हर महान उत्सव के पीछे एक कहानी होती है। फूल देई के पीछे भी एक लोककथा है जो इतनी कोमल है कि सुनते ही मन भर आता है। कहते हैं कि हिमालय की किसी पहाड़ी रियासत में फ्यूँली नाम की एक राजकुमारी थी। वह बेहद सुंदर और प्रकृति से प्रेम करने वाली थी, पहाड़ के जंगल, नदियाँ, फूल, पक्षी, सब उससे प्यार करते थे। लेकिन विधि का विधान कुछ और था। राजकुमारी का विवाह दूर काले पहाड़ के पार हुआ और वह अपनी मातृभूमि से दूर चली गई। उसके जाने के बाद पहाड़ सूना हो गया। पेड़-पौधे मुरझाने लगे। पंछी उदास हो गए। और फ्यूँली खुद भी घर की याद में तड़पती रही। ससुराल में उसे मायके जाने की अनुमति नहीं मिली। हज़ार गुहार लगाने पर भी सास ने नहीं माना। धीरे-धीरे यह विरह उसे रोग की तरह खाने लगा और एक दिन वह इस संसार से चली गई। ससुराल वाले उसे उसके पीहर के पास ही गाड़ देते हैं। और कुछ दिनों बाद उसी स्थान पर पीले रंग के छोटे-छोटे फूल खिल आते हैं। उस फूल का नाम तब से "फ्यूँली" पड़ा। और तभी से राजकुमारी की याद में, उस विरह और उस प्रेम की याद में, फूल देई का लोकपर्व मनाया जाता है।

यह कथा केवल एक राजकुमारी की नहीं है। यह उन असंख्य कुमाऊँनी महिलाओं की भी कथा है जो ब्याह के बाद अपनी माटी से दूर चली जाती थीं और जिनके भीतर जीवन भर एक विरह जलता रहता था। इसी भावना से जुड़ी है चैत्र मास की एक और परंपरा, भिटौली। भिटौली का अर्थ है कि चैत्र के महीने में भाई अपनी विवाहित बहन के घर जाता है और उसके लिए उपहार, कपड़े, मिठाई और गहने लेकर जाता है, इस बात का प्रतीक कि बहन को याद किया जाता है, वह भूली नहीं गई। कुमाऊँ के पहाड़ी समाज में जहाँ महिलाएँ दूरदराज के गाँवों में ब्याही जाती थीं और महीनों तक मायके नहीं जा पाती थीं, वहाँ भिटौली की यह परंपरा एक भावनात्मक पुल थी। फूल देई और भिटौली मिलकर कुमाऊँनी स्त्री-जीवन की उस पूरी अनुभव-भूमि को स्पर्श करते हैं जो प्रेम, विरह, परिवार और प्रकृति के धागों से बुनी हुई है।

कुमाऊँ और गढ़वाल के कई इलाकों में यह पर्व एक-दो दिन नहीं बल्कि पूरे आठ दिन तक, और कुछ गाँवों में तो पूरे चैत्र मास भर चलता है। जब तक वसंत की बहार है, जब तक जंगलों में फूल हैं, तब तक फुलारी बच्चे सुबह-सुबह निकलते रहते हैं। पर्व के अंतिम दिन एक विशेष अनुष्ठान होता है। जो गुड़, चावल और पैसे बच्चों ने एकत्र किए होते हैं, उनसे घोघा माता के लिए भोग बनाया जाता है। घोघा माता को फूलों की देवी माना जाता है। रिंगाल से बनी एक छोटी पालकी को फूलों से सजाया जाता है और इसी को "घोघा माता की डोली" कहते हैं। इस डोली की विशेष पूजा होती है और फिर घोघा माता को भोग लगाकर उनकी विदाई की जाती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि घोघा माता की पूजा केवल बच्चे ही कर सकते हैं, बड़े इस पूजा में भाग नहीं लेते। यह एक ऐसा आध्यात्मिक स्थान है जहाँ बच्चे का अधिकार बड़ों से भी ऊपर है।

आधुनिक समय में जब हम पर्यावरण संरक्षण की बात करते हैं, तो वह अक्सर नारों और सम्मेलनों तक सीमित रह जाती है। लेकिन फूल देई हज़ारों साल पहले की एक ऐसी संस्कृति की देन है जो पर्यावरण को पाठ्यक्रम की तरह नहीं, जीवन की तरह जीती थी। बच्चे जब जंगल में जाते हैं और फूल चुनते हैं, तो सिखाया जाता है कि केवल उतने ही फूल लो जितने ज़रूरी हों, पेड़ को नुकसान मत पहुँचाओ। यह जीवित पारिस्थितिक शिक्षा है जो किसी पाठशाला में नहीं दी जा सकती। पहाड़ों पर मिलने वाले फूल और वनस्पतियाँ प्राकृतिक औषधियाँ भी हैं। फूल देई बच्चों को इन वनस्पतियों की पहचान और उनके प्रति आदर की भावना देता है।

लेकिन यह भी सच है कि आज यह पर्व कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। अल्मोड़ा और आसपास के जिलों के अनेक गाँव पलायन की मार झेल रहे हैं। जब गाँव में बच्चे ही नहीं बचेंगे तो फुलारी कौन बनेगा? जब घरों की देहरियाँ बंद हों तो फूल कहाँ चढ़ाए जाएँगे? मानिला जैसे छोटे कस्बों में भी यह तनाव महसूस होता है, जहाँ एक तरफ युवा रोजगार के लिए शहरों की ओर जा रहे हैं और दूसरी तरफ पुरानी परंपराओं को थामने वाले हाथ कम होते जा रहे हैं। स्कूलों और महाविद्यालयों में इन परंपराओं को पाठ्यक्रम में शामिल नहीं किया गया है। विद्यार्थी राष्ट्रीय त्योहारों के बारे में तो जानते हैं, लेकिन अपनी लोकसंस्कृति से धीरे-धीरे अनजान होते जा रहे हैं। यह एक गहरी सांस्कृतिक क्षति है जिसकी भरपाई शायद बाद में संभव न हो। इसीलिए यह ज़िम्मेदारी हम सबकी है, शिक्षकों की, विद्यार्थियों की, और इस माटी से प्रेम करने वाले हर व्यक्ति की, कि इन पर्वों को केवल मनाएँ नहीं, उन्हें समझें, उनके बारे में लिखें और अगली पीढ़ी तक पहुँचाएँ।

किसी घर के दरवाजे पर फूल रखना, यह कितना सीधा-सरल काम लगता है। लेकिन जब कोई बच्चा भोर में उठकर, ओस भीगी घास पर चलकर, जंगल से ताजे फूल लाकर, एक घर की देहरी पर उन्हें रखता है और गाता है कि आपका अन्नभंडार भरा रहे, तो यह केवल एक रस्म नहीं है। यह एक बच्चे का वह विश्वास है कि संसार में अच्छाई है। यह एक समाज की वह सामूहिक प्रार्थना है कि हम एक दूसरे के दरवाजे तक जाएँ, शुभकामनाएँ दें, और मिलजुलकर रहें। यह प्रकृति के साथ उस रिश्ते का उत्सव है जिसे आज हम भुला बैठे हैं।

फूल देई हमें याद दिलाता है कि कुमाऊँ की संस्कृति में उत्सव और जीवन, प्रकृति और मनुष्य, बच्चा और समाज, सब एक दूसरे में घुले-मिले हैं। यहाँ कोई अलगाव नहीं है। यहाँ जीवन एक समग्र लय में चलता है।

फागुन की आहट

मार्च की खिड़की से देखो, झाँक रही है भोर सुनहरी,
हवाओं में अब घुलने लगी है, एक मस्ती गहरी-गहरी।

सर्द रातों की वो चादर, अब सिमटने को तैयार है,
कलियों के होंठों पर देखो, खिलने का इकरार है।

बागीचों में टेसू दहके, जैसे जलती कोई आग हो,
हर दिल में बजता धीमे से, बसंत का कोई राग हो।

सूखी टहनियों पर भी देखो, कोपलें अब मुस्काई हैं,
मार्च के इस आँगन में, खुशियाँ लौटकर आई हैं।

फिर उड़ेगा अब अबीर, और मचेगी खूब खलबली,
रंगों की छुअन से महकेगी, मन की सूखी हर गली।

कोई पुराना रूठा हो तो, हाथ बढ़ाकर थाम लो,
होली के इस पाक जश्न में, बस मोहब्बत का नाम लो।

मार्च का यह माह अधूरा, बिन होली के रंगों के,
जी लो ये लम्हा खिलखिलाकर, अपनों के ही संग में।

डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

in the Digital Age

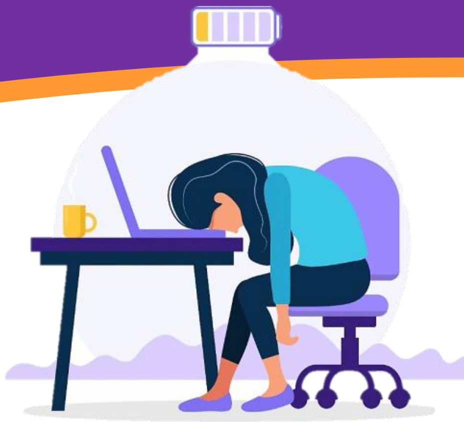

In today's fast-paced world, technology has become an inseparable part of our daily lives. From the moment we wake up to the sound of alarms on our smartphones to the late-night scrolling through social media feeds, we are constantly connected. While this digital revolution has brought convenience, knowledge, and global connectivity, it has also introduced new challenges—especially for mental health.

One of the most significant impacts of the digital age is the rise of social media. Platforms designed to connect people often end up creating unrealistic standards of beauty, success, and happiness. Students frequently compare their real lives with the carefully curated highlights of others, leading to feelings of inadequacy, low self-esteem, and anxiety. The pressure to appear perfect online can silently affect one's confidence and emotional well-being.

Another concern is the constant need to stay connected. Notifications, messages, and updates create a sense of urgency that can be overwhelming. Many students feel anxious if they are not constantly checking their devices, a phenomenon often referred to as "fear of missing out" (FOMO). This continuous engagement with screens can reduce concentration, disrupt sleep patterns, and increase stress levels.

Moreover, excessive screen time has replaced meaningful face-to-face interactions. While digital communication is quick and easy, it often lacks the emotional depth of real conversations. Over time, this can lead to feelings of loneliness and isolation, even when one appears socially active online.
However, it is important to recognize that technology is not entirely harmful. When used wisely, it can be a powerful tool for mental health awareness and support. Online communities, mental health apps, and educational resources have made it easier for students to seek help, share experiences, and learn coping strategies. The key lies in maintaining a healthy balance.

To protect mental well-being in the digital age, students must develop mindful habits. Setting limits on screen time, taking regular breaks from social media, and engaging in offline activities such as reading, sports, or spending time with friends can make a significant difference. Practicing self-awareness and understanding one's emotional needs is equally important.

"In conclusion, the digital age has transformed the way we live, learn, and connect. While it offers countless benefits, it also poses serious challenges to mental health. As students, it is our responsibility to use technology consciously rather than letting it control us. By finding a balance between the virtual and the real world, we can ensure that our minds remain as healthy as our devices are smart".

Dr. Anju Nigam
Assistant Professor
Department of Physics

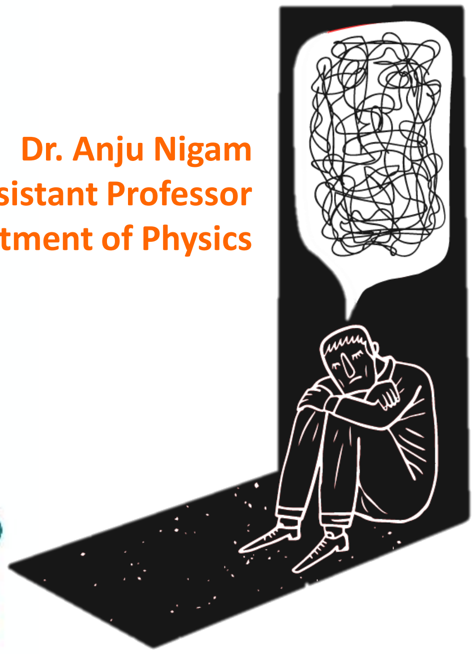

A NARROW PASSAGE

(8)

Geopolitics, Oil, and India's Uneasy Silence

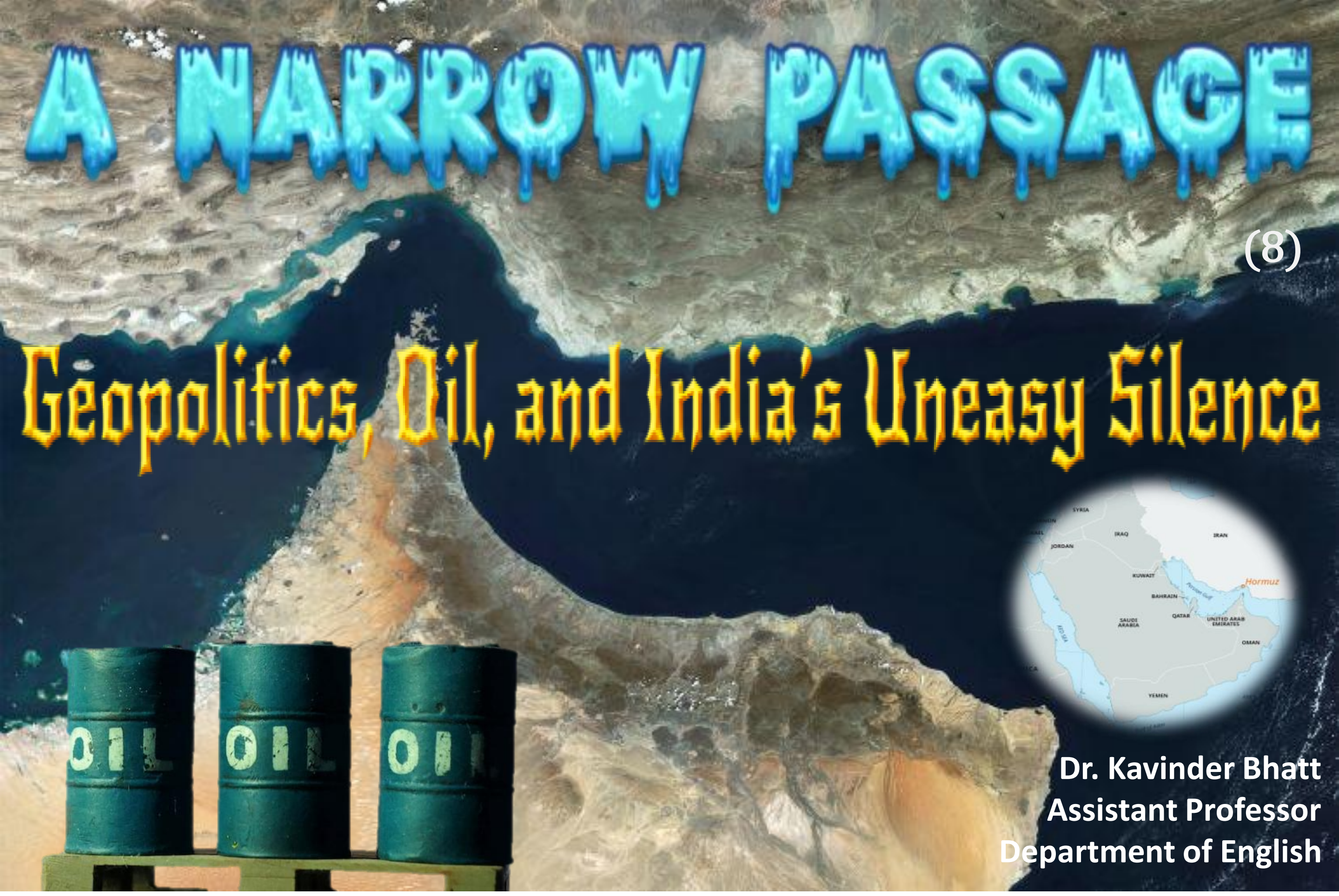

Dr. Kavinder Bhatt
Assistant Professor
Department of English

There is a stretch of water, twenty-one miles wide at its narrowest, that sits between the Iranian coastline to the north and the shores of Oman to the south. For most of history, it was a navigational nuisance, a tight corridor that sailors negotiated with care. Today, the Strait of Hormuz is something altogether more consequential: the single most important artery of the global energy economy. And in March 2026, it closed.

The closure was not sudden. It was the culmination of a long and escalating confrontation between Iran on one side and the United States and Israel on the other, a confrontation rooted in failed nuclear negotiations in Geneva, a brief but bloody twelve-day air conflict in June 2025, and finally, on 28 February 2026, a full-scale military strike by American and Israeli forces on Iranian nuclear and military installations. Iran's response was swift and sweeping. Missile and drone attacks rained on US military bases and Gulf energy infrastructure. And then, on 2 March 2026, a senior official of the Islamic Revolutionary Guard Corps made an announcement that sent shockwaves through every oil market on earth: the Strait of Hormuz was closed. Any vessel that attempted to cross it, the IRGC declared, would be set ablaze.

For a country like India, 1.4 billion people, the world's fastest-growing major economy, and one that imports nearly 88 per cent of its crude oil requirements, these words were not merely geopolitical rhetoric. They were an economic emergency.

The World's Most Dangerous Chokepoint

To understand why a twenty-one-mile passage in the Persian Gulf can bring the world's energy systems to a halt, one needs only to look at the numbers. According to the US Energy Information Administration, approximately 20.9 million barrels of crude oil, condensate and petroleum products pass through the Strait of Hormuz every single day. That represents roughly 20 per cent of global petroleum consumption and about one-quarter of all seaborne oil trade. The strait also carries one-fifth of the world's liquefied natural gas, much of it produced by Qatar at its vast Ras Laffan complex.

When Iran declared the strait closed and began attacking vessels, tanker traffic did not trickle. It plummeted. Ship-tracking data from S&P Global Market Intelligence showed that from over a hundred daily transits before the conflict, only 21 tankers moved through the route in the first two weeks of the war. By mid-March 2026, the figure had dropped to near zero on most days, with over 150 ships anchored outside the strait, their crews stranded, their owners paralyzed by insurance withdrawals that made any transit economically suicidal. The Joint War Committee of the London insurance market had included the waters around Oman in its list of high-risk maritime areas, and protection and indemnity insurance was effectively cancelled for vessels attempting the passage.

The commodity markets responded with historic ferocity. Brent crude oil, which had been trading at around 65 to 70 dollars per barrel before the war, surged past 100 dollars for the first time in four years by 8 March. It reached a peak of 126 dollars per barrel within days. The Federal Reserve Bank of Dallas, in a research note published on 20 March 2026, modelled the potential macroeconomic fallout: a sustained closure of the strait could lower global real GDP growth by an annualized 2.9 percentage points in a single quarter. Economists warned that if the closure extended to months, Brent prices could exceed 150 dollars per barrel.

The disruption, described by analysts as the largest to global energy supply since the 1973 oil embargo, threatened not just fuel prices but fertilizers, aluminium, helium, and the entire chain of commodities that depends on Gulf production.

India in the Crosshairs

For India, the crisis was not a distant geopolitical drama. It was a direct threat to the economic wellbeing of hundreds of millions of people.

According to data from Kpler, a commodity intelligence firm, the Strait of Hormuz normally funnels between 2.5 million and 2.7 million barrels of India's daily crude imports, sourced primarily from Iraq, Saudi Arabia, Kuwait and the United Arab Emirates. India sources roughly 53 per cent of its oil imports and between 40 and 47 per cent of its LNG imports from the Middle East. Qatar alone supplies a significant share of India's LNG, and the Iranian drone attack on the Ras Laffan terminal forced Qatar Energy to halt LNG production altogether. For a country that imports approximately 90 per cent of its LPG, the cooking gas used by millions of Indian households, from routes transiting Hormuz, the implications were immediate and intimate.

Research from MUFG estimated that every ten dollars per barrel rise in oil prices widens India's current account deficit by 0.4 to 0.5 per cent of GDP. At 100 dollars per barrel, India's current account deficit was heading toward the 3 per cent of GDP mark, compared to a baseline forecast of around 1.5 per cent. The rupee had begun slipping to record lows. Inflation pressures were building. The Indian government set up a round-the-clock control room to monitor petroleum stocks, and on 11 March the Petroleum Ministry announced that India had successfully rerouted 70 per cent of its crude imports away from Hormuz-transiting routes. The government invoked the Essential Commodities Act to issue a Natural Gas Control Order on 9 March, protecting domestic supply and CNG for vehicles.

India consumes roughly 5.5 million barrels of crude oil per day. Even with emergency diversification, the price of every barrel being purchased, whether from Russia, West Africa, or the Americas, was set by a global benchmark that had shot through the roof. Supply can be rerouted. Price cannot. This was perhaps the most important lesson the crisis taught, and it is one that will outlast the conflict itself.

Diplomacy in a Burning Strait

India's response to the crisis revealed something distinctive about its foreign policy: a studied refusal to choose sides, combined with a determined pursuit of its own interests through quiet negotiation. New Delhi did not condemn the US-Israeli strikes on Iran. Neither did it endorse them. What it did instead was talk to Tehran.

The results were remarkable. Iran had declared the strait closed to vessels of countries it considered hostile. Yet it granted rare exceptions for Indian-flagged ships. On approximately 13 and 14 March 2026, two LPG carriers, the Shivalik and the Nanda Devi, chartered by Indian Oil Corporation and operated by the Shipping Corporation of India, transited the strait safely after diplomatic engagements between New Delhi and Tehran. Iran's Ambassador to India, Mohammad Fathali, publicly confirmed the allowances as exceptions, describing them as a goodwill gesture. India's Ministry of Ports, Shipping and Waterways confirmed that the vessels had crossed safely and were *en route* to Indian ports. As of mid-March, the Indian government was working to secure passage for 22 additional stranded vessels, including six LPG carriers, one LNG carrier, and four crude oil tankers.

This quiet success was a dividend of what the Indian foreign policy establishment calls strategic autonomy, the long-maintained posture of not aligning rigidly with any great power bloc. India had maintained substantive ties with Iran even through years of Western pressure. Those ties, built over decades of people-to-people contact, trade, and cultural connection, proved their worth when a burning strait made every diplomatic channel precious.

There is something instructive here for smaller and medium-sized nations watching the crisis unfold. The countries that fared best in the initial weeks of the Hormuz closure were not those most aligned with Washington or most accommodating to Tehran. They were those that had kept lines open to both sides, that had refused the false comfort of a clear geopolitical identity. Turkey secured passage for one of its vessels. Pakistan sent destroyers to escort tankers. India negotiated LPG carriers through the blockade. These were nations operating not from ideology but from interest, and their pragmatism paid off.

The Russia Equation

The Hormuz crisis also exposed a contradiction at the heart of India's relationship with the United States that no amount of diplomatic language could fully conceal.

In the months leading up to the war, Washington had been pressuring New Delhi to reduce its purchases of Russian crude oil, a habit India had developed enthusiastically since 2022, when Western sanctions on Russia turned Moscow into a discount oil supplier of enormous convenience. The US had imposed tariffs on Indian exports and sanctioned major Russian energy firms as part of a campaign to reduce Russia's energy revenues. The pressure had worked, at least partially. India's Russian crude imports had fallen to roughly 1.1 million barrels per day by January 2026, about 21 per cent of its total imports.

Then the US went to war with Iran, and the logic of its own pressure campaign collapsed spectacularly. With Hormuz closed, Russian oil, which travels on routes that bypass the strait entirely, became not just convenient but strategically vital for India. On 5 March 2026, the US Treasury issued a 30-day temporary license allowing Indian refiners to purchase Russian oil, acknowledging that energy market stability sometimes requires tactical flexibility over sanctions enforcement. Indian refiners moved quickly to secure around 30 million barrels of Russian crude. Analysts at Kpler estimated that Russian deliveries to India could temporarily rise to 1.8 to 2 million barrels per day, effectively returning to the peaks of the post-Ukraine crisis period. As CNN noted pointedly: Trump wanted India off Russian oil. His war with Iran was now undermining that goal.

This is not merely an irony. It is a window into the deeper incoherence of great-power energy policy in the twenty-first century. The United States sought simultaneously to punish Russia economically, to pressure India diplomatically, and to wage war in a region through which a fifth of the world's oil flows. These three objectives were always in tension. The Hormuz crisis simply made that tension visible.

The Critique: War and Its Silenced Costs

It is here that one must pause and ask the questions that the machinery of geopolitics tends to suppress. The US-Iran war, whatever its stated strategic justifications, has produced consequences that its architects may not have fully reckoned with.

More than 20 per cent of the world's daily oil supply has been disrupted in what economists have described as the largest energy crisis since the 1970s. Global food prices are under pressure because fertilizers, many of which transit the Strait of Hormuz, have become scarcer. Helium, used in medical imaging, semiconductor manufacturing, and scientific research, is in short supply. LNG prices have surged, affecting not just India but Europe, Japan, and South Korea.

From one perspective, one might argue that the strikes on Iran were a response to a real and documented nuclear threat, that repeated diplomatic overtures had failed, and that a military response was the last available instrument. This argument deserves to be taken seriously. But the collateral consequences of the military action, consequences borne overwhelmingly not by the combatants but by energy-importing developing nations, raise profound questions about proportionality and global responsibility.

The Chatham House analysis of March 2026 made a disturbing point: Iran's strategy in the strait does not depend on naval supremacy. Iran's navy may have been largely destroyed, as the US claimed. But Iran can still launch missile and drone attacks from its coast. The lesson of the Red Sea, where Houthi attacks reduced container traffic by roughly 90 per cent in 2024, applies here too. A relatively small number of asymmetric attacks can impose costs on global commerce that dwarf the military capacity of the attacker. The strait may remain functionally closed even after a military campaign to open it, because the risk of attack is itself sufficient to deter commercial shipping. Control of a chokepoint, in the modern era, does not require control of the water. It requires only the credible threat of harm.

This is the uncomfortable reality that the architects of the war must confront. The strait was declared open by US military forces. The tankers remained anchored. The insurance markets remained closed. The oil prices remained elevated. Military victory and economic normalcy are not the same thing, and in the age of asymmetric conflict and globally integrated commodity markets, the gap between them can be vast and costly.

India's Lesson and India's Question

India has, in the medium term, managed this crisis with considerable skill. Its energy diversification, sourcing from 40 countries, building Russian crude into its supply basket, maintaining strategic petroleum reserves, has provided buffers that did not exist a decade ago. Its diplomacy with Iran secured passage for its vessels when the rest of the world was paralyzed. Its refusal to take sides has preserved relationships that have paid real dividends.

But the Hormuz crisis has also made nakedly visible what India's energy planners have long known but rarely said publicly: India remains structurally dependent on a global energy system shaped by great-power politics over which it has no control. When two superpowers decide to go to war over a nuclear programme in West Asia, the households of Agra, Srinagar, and Chennai pay more for cooking gas and petrol. That is not a fact of nature. It is a consequence of choices, choices about where energy comes from, how it is transported, and who gets to disrupt those flows.

The uneasy silence that India has maintained in this crisis is not merely diplomatic prudence. It is the silence of a nation that knows it is caught between worlds: too large and too ambitious to be a bystander, too dependent and too non-aligned to be a protagonist. The narrow passage of Hormuz holds a mirror to India's broader condition, the condition of a rising power still navigating the straits of great-power competition with the instruments of a more cautious era.

Twenty-one miles. The world's most dangerous passage. And India sailing through it, quietly, with its lights half-dimmed.

The End of the Carbon Standard

For over a century, the global hierarchy has been an extractive one. The "Petrostate" model—pioneered by John D. Rockefeller's Standard Oil and perfected by the OPEC nations—dictated that national power was a function of geology. If you sat atop a reservoir of ancient, pressurized sunlight in the form of hydrocarbons, you were a player. If you didn't, you were a customer, forever bleeding capital to keep your lights on and your tanks full.

But the 2020s marked a "Point of No Return." A new entity has emerged: the **Electrostate**. This is not merely a country that uses renewable energy; it is a nation that treats energy as a **manufacturing output** rather than a **geological find**. This shift represents a transition from a world of "Molecules" (burning things) to a world of "Electrons" (moving things). The friction between these two systems is now the primary driver of global inflation, military strategy, and the race for artificial intelligence.

I. The Anatomy of the Petrostate: Power Through Depletion

To understand the future, we must deconstruct the mechanics of the legacy system. The Petrostate operates on a **Depletion Logic**.

1. **The Marginal Cost Trap:** A Petrostate is defined by its "Operating Expenditure" (OPEX). Every barrel of oil extracted is a barrel that is gone forever. To maintain its status, the Petrostate must run a permanent race against the "natural decline" of its fields. On average, a conventional oil field loses 4% to 8% of its output every year. This creates a desperate cycle of reinvestment. If a Petrostate stops drilling for even eighteen months, its geopolitical relevance begins to evaporate.
2. **The Rentier Social Contract:** Because Petrostates derive wealth from the ground rather than the productivity of their people, they often develop "Rentier" economies. The state does not tax its citizens; it distributes oil rents to buy social stability. This creates a fragile political structure. When the global price of Brent Crude drops below the "fiscal break-even" point, these states face immediate existential threats. We saw this in the Arab Spring and the collapse of the Venezuelan economy.
3. **Territorial Sovereignty and Choke Points:** The Petrostate's power is physical. It relies on the "Tanker War" logic. Because oil is heavy, dangerous, and liquid, it must flow through specific geographic "choke points"—the Strait of Hormuz, the Malacca Strait, or the Suez Canal. Consequently, the world's navies are essentially "insurance agents" for the Petrostate system, ensuring that the flow of molecules is never interrupted.

II. The Rise of the Electrostate: Power Through Scale

The Electrostate represents a total inversion of the Petrostate's DNA. It replaces the drill bit with the semiconductor and the pipeline with the high-voltage DC (HVDC) cable.

1. **The Learning Curve (The "Wright's Law" Advantage):** Unlike oil, which gets more expensive to find as easy reserves are depleted, the technologies of the Electrostate (Solar, Wind, Batteries) follow **Learning Curves**. For every doubling of cumulative production, the cost of solar drops by roughly 20-30%.

   Petro-Logic: Scarcity makes things more valuable.

   Electro-Logic: Abundance (through mass production) makes things more powerful. An Electrostate like China or a "Hybrid" like the US doesn't want high energy prices; it wants the lowest possible energy prices to fuel its domestic industries, making its manufactured exports hyper-competitive.

2. **Capital Expenditure (CAPEX) vs. Freedom:** The Electrostate is a "Front-Loaded" economy. It requires massive upfront investment to build the "Harvesting Machines" (solar farms and turbines). However, once the CAPEX is paid, the **Marginal Cost of Energy is Zero**. The sun does not send a bill. The wind does not join a cartel to raise prices. This creates "Energy Sovereignty." Once a nation is fully electrified, it is no longer a hostage to global commodity cycles. An Electrostate is effectively "shorting" the oil market forever.

3. **The "System Control" Doctrine:** In an Electrostate, power isn't held by the person who owns the land; it's held by the person who owns the **Standards and the Software**. The "OPEC of the Future" will not be a group of countries with oil; it will be the countries that control the patents for solid-state batteries, the software for "Smart Grids," and the ultra-high-efficiency inverters that manage the flow of electrons.

The Ingredients of Power and the Digital Hunger

III. The Critical Mineral Wars: The New Map of Geopolitical Conflict

In the Petrostate era, you fought over **territory** (the "where"). In the Electrostate era, you fight over **atoms** (the "what"). We are shifting from a world of **Fuel Intensity** to **Material Intensity**.

1. **The Atomic Shift: From Burning to Banking:** Oil is a "combustion molecule." You pull it out, set it on fire, and it is gone. This creates a permanent dependency on the **flow** of the commodity. The Electrostate, however, deals in "Energy Banking." A battery is essentially a bank for electrons. Once you have the lithium, cobalt, and copper inside that battery, those atoms stay there for a decade.

The Strategic Implication: This moves the geopolitical risk from **daily supply** to **initial inventory**. A country that cannot get oil today stops moving today. A country that cannot get lithium today simply cannot *build* its fleet for tomorrow, but its existing fleet keeps running.

2. **The Refined Monopoly: The "Middleman" Strategy:** The greatest trick the first major Electrostate (China) played was not owning the mines, but owning the **refineries**.
The Bottleneck: While Australia and Chile dig up the raw lithium, China processes roughly **80% of the world's battery-grade chemicals**.
The "Gallium" Warning: In 2023-2024, China began restricted exports of gallium and germanium—minerals essential for high-speed chips and power electronics. This was a "shot across the bow" to the West, proving that an Electrostate can cripple a rival's high-tech industry as effectively as an oil embargo crippled the 1970s economy.

3. **Deep-Sea Mining: The New "Great Game":** The search for these "atoms" is pushing nations into the Clarion-Clipperton Zone of the Pacific. Here, thousands of meters below the surface, lie "polymetallic nodules" rich in manganese and nickel.
The Conflict Zone: Just as the South China Sea became a flashpoint for oil, the deep seabed is becoming a flashpoint for the Electrostate. Whoever controls the technology to harvest the ocean floor controls the next 50 years of battery chemistry.

IV. AI and the Electron Hunger: Data Centres as the New Refineries

Artificial Intelligence is the "ultimate consumer." It is the bridge between the digital dream and the physical reality of the power grid.

1. **The "Baseload" Crisis and the AI Paradox:** AI data centres are not like your home computer; they are "industrial-scale loads" that run at 100% capacity, 24/7. A single large AI-focused data centre can consume as much electricity as **100,000 households**.

The Grid Tension: Solar and wind are variable (they stop when the sun sets). AI cannot stop. This creates a "baseload gap" that is forcing Electrostates to return to **Nuclear Power**.
The Three Mile Island Revival: In a historic move, Microsoft signed a deal to restart a reactor at Three Mile Island specifically to power its AI ambitions. This signals that the "Electrostate" isn't just about "green" energy—it's about **massive, firm power**.

2. **Tech Giants as "Sovereign Utilities":** Companies like Amazon, Google, and Meta are now the world's largest buyers of clean energy. They are effectively becoming **private Electrostates**.
The Silo Risk: There is a growing fear that tech giants will "lock up" all the new clean energy capacity for themselves, leaving regular citizens and smaller industries to deal with high prices and aging fossil fuel plants.
The Virtual Power Plant (VPP): AI is also the cure. AI is being used to coordinate millions of home batteries and EV chargers into "Virtual Power Plants" that can stabilize the grid during peaks.

V. The Electrified Battlefield: The Future of Warfare

The transition from Petro to Electro changes how wars are won and lost.

1. The End of the "Fuel Convoy"

In the Iraq and Afghanistan wars, one out of every 24 fuel convoys resulted in a casualty. A Petro-military is fundamentally limited by its "tail"—the long line of trucks carrying diesel to the front.

The Silent Advantage: Electric and hybrid military vehicles (like the Oshkosh hybrid JLTV) offer "Silent Watch" and "Silent Drive" capabilities. A tank that doesn't have a hot, loud exhaust is nearly invisible to thermal sensors and human ears.

2. Drones and the "Battery War"

The war in Ukraine has proven that $500 battery-powered drones can destroy $5 million diesel-powered tanks.

Energy-Intensive Weaponry: The rise of **Directed Energy Weapons (Lasers)** and electronic jamming equipment requires massive "bursts" of electricity. A Petro-tank cannot easily generate the megawatts needed for a laser shield; an Electro-tank, built around a massive battery architecture, can.

3. Energy Resilience at the Base

The U.S. military is deploying **Microgrids** and **Small Modular Reactors (SMRs)** (like Project Pele) to make bases independent of the local civilian grid. If a rival hacks the national power grid, the Electro-military keeps fighting using its on-site "atomic batteries."

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany

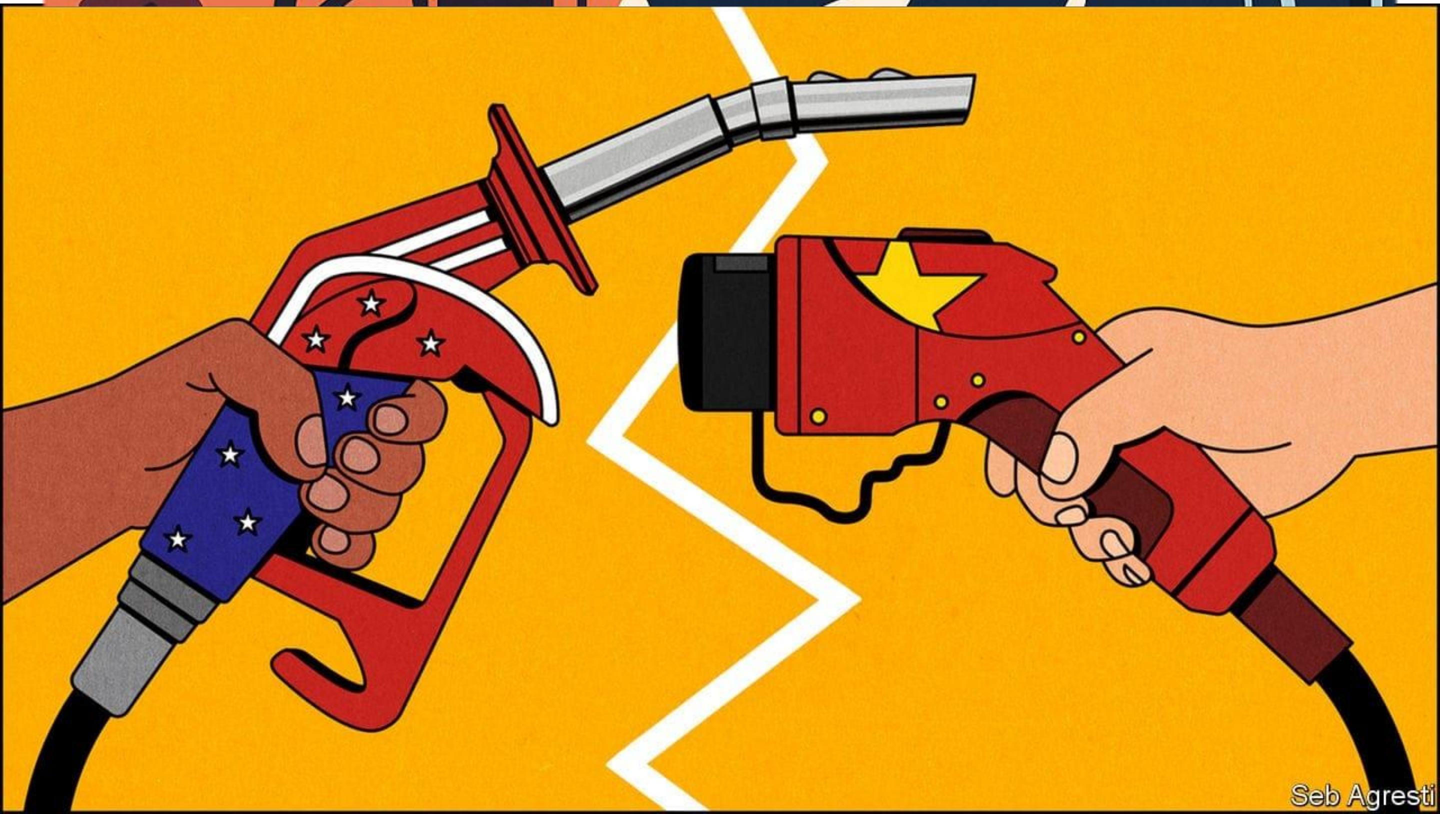

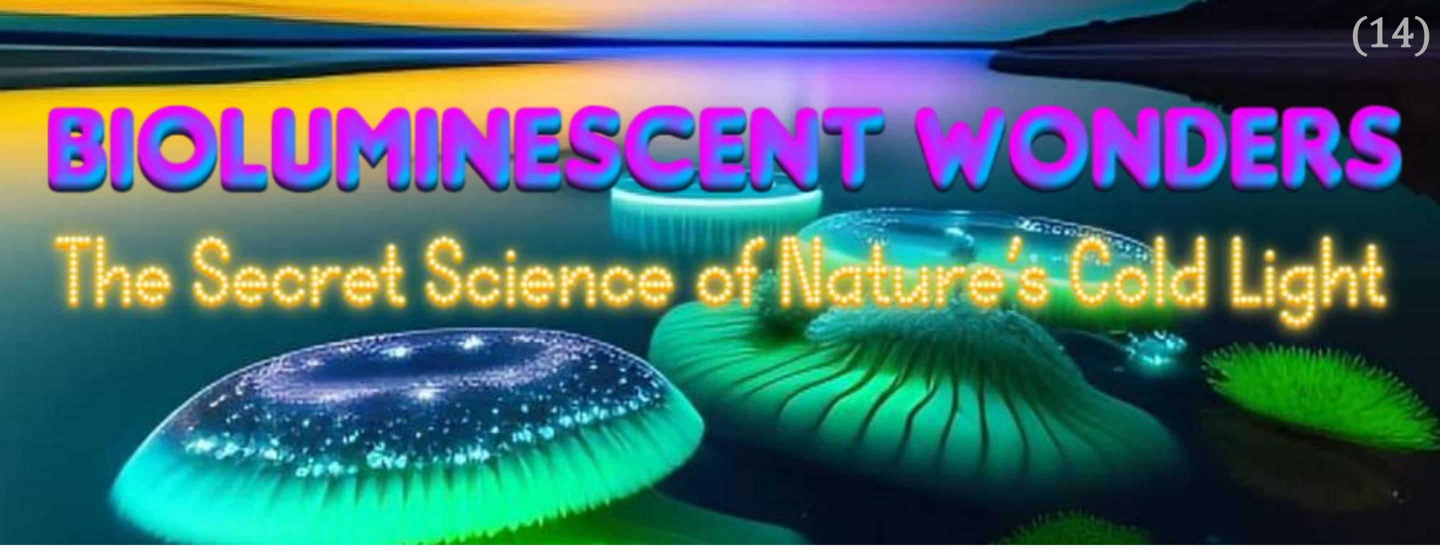

Imagine walking along a midnight shore where every footprint glows neon blue, or wandering through a forest where the mushrooms beneath your feet radiate a ghostly emerald hue. This isn't a scene from James Cameron's Avatar; it is the ancient, chemical magic of **bioluminescence**.

While humans have mastered the incandescent bulb and the LED, nature has been perfecting "cold light" for millions of years. From the crushing darkness of the Mariana Trench to the humid summer air of our own backyards, life has found a way to turn chemistry into a lantern.

The Alchemy of the Glow: How It Works

At its heart, bioluminescence is a masterclass in organic chemistry. Unlike a lightbulb, which generates heat (thermal energy) to create light, bioluminescent organisms produce light through a chemical reaction that releases virtually no heat—making it one of the most efficient energy conversions on Earth.

The secret recipe requires two primary ingredients:

1. Luciferin: The "fuel" or light-emitting molecule.

2. Luciferase: The "spark" or enzyme that catalyzes the reaction.

When **Luciferin** reacts with oxygen, facilitated by **Luciferase**, it creates a high-energy intermediate. As this molecule settles back to its stable state, it releases a photon of light. The specific color—ranging from electric blues in the ocean to citrus yellows on land—is determined by the structural arrangement of these molecules.

A Spectrum of Survival: Why Glow?

Nature never does anything just for "the aesthetic." Every glow serves a calculated purpose in the brutal game of survival:

1. **The Lure of the Deep:** The infamous **Anglerfish** dangles a glowing orb (filled with bioluminescent bacteria) in front of its mouth. In the pitch-black deep sea, curious prey mistakes this light for a meal, only to become one themselves.
2. **The "Burglar Alarm":** Tiny plankton called **Dinoflagellates** glow when the water around them is agitated. This isn't just a light show; it's a distress signal. By lighting up, they reveal the position of the predator eating them, attracting even larger predators to come and eat their attacker.
3. **The Language of Love: Fireflies** use a rhythmic Morse code of flashes to find mates. Each species has a unique "signature" blink, ensuring they find the right partner in the dark.
4. **The Spore Spreader:** Certain **Ghost Fungi** glow to attract nocturnal insects. The insects crawl over the mushrooms, picking up spores and inadvertently replanting the forest as they fly away.

From Deep Sea to Doctor's Office

The "secret science" of nature's light is no longer a secret to humans—we are now harnessing it to revolutionize medicine and technology.

The GFP Revolution: Scientists extracted the Green Fluorescent Protein (GFP) from jellyfish and now use it as a "molecular lantern." By attaching this protein to cancer cells or viruses, researchers can watch under a microscope as these diseases spread through a living organism in real-time. It's like turning on a light inside the human body.

Furthermore, the dream of **Living Cities** is moving closer to reality. Imagine streets lined with bioluminescent trees instead of electric lamps, or "glow-in-the-dark" plants that change color when they need water. By splicing the genes of glowing fungi into common houseplants, innovators are creating a future where our infrastructure breathes and glows.

Conclusion: The Future is Bright

Bioluminescence reminds us that even in the darkest corners of our planet, life finds a way to shine. As we continue to decode the genetic blueprints of these glowing wonders, we aren't just learning how to light up the dark—we are learning how to heal the body, protect the environment, and perhaps, one day, walk through a world powered by the very chemistry of life itself.

Sidebar: Glowing Trivia (The "Did You Know?" Corner)

• **The 90% Rule:** Roughly **90% of deep-sea creatures** are bioluminescent. In the abyss, light is the primary language of survival.

• **Cold Light:** A standard incandescent bulb wastes about **90% of its energy as heat**. A firefly's light is **100% light energy**, meaning it's perfectly "cold" to the touch.

• **Military Magic:** During World War II, Japanese soldiers used dried "Omiura" (bioluminescent shrimp). They would dampen the dried powder with water to create a low-intensity light for reading maps without alerting enemies to their position.

• **Nature's Flashbang:** Some deep-sea shrimp "vomit" clouds of glowing chemicals to blind and distract predators while they make their escape!

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany

समसामयिकी

मार्च अंक

समसामयिकी

- नीति आयोग के अंतर्गत पहला राज्य नवाचार मिशन कहाँ शुरू किया गया? त्रिपुरा
- सरबानंद सोनोवाल ने तीन अंतर्देशीय जलमार्ग परियोजनाओं का उद्घाटन कहाँ किया? डिब्रूगढ़
- जनऔषधि सप्ताह 2026 की शुरुआत किसके साथ हुई? राष्ट्रव्यापी स्वास्थ्य शिविर
- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने दिल्ली में कितनी महिला कल्याण योजनाओं का शुभारंभ किया? चार
- 2 मार्च 2026 को भारत और किस देश ने तीन समझौतों पर हस्ताक्षर किए? कनाडा
- भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार अप्रैल–दिसंबर 2025 के दौरान क्या कम हुआ? चालू खाता घाटा
- "महात्मा: एक महान संचालक" पुस्तक का विमोचन किसने किया? मनसुख मंडाविया
- भारत ने जापान के साथ किस समझौते का नवीनीकरण किया? द्विपक्षीय स्वैप समझौता
- किन संस्थानों के वैज्ञानिकों ने 50 साल पुराने जीवाणु जीन विनियमन मॉडल को चुनौती दी? बोस इंस्टीट्यूट और रटगर्स विश्वविद्यालय
- विश्व वन्यजीव दिवस कब मनाया जाता है? 3 मार्च
- अंतर्राष्ट्रीय मलेरिया सम्मेलन 2026 का समापन कहाँ हुआ? नई दिल्ली
- सीआईएसएफ स्थापना दिवस 2026 कब मनाया गया? 10 मार्च
- भारतीय रेलवे ने कितने करोड़ रुपये से अधिक की अवसंरचना परियोजनाओं को मंजूरी दी? 765 करोड़
- जल जीवन मिशन को कब तक बढ़ाने की मंजूरी दी गई है? 2028
- डोनाल्ड ट्रम्प ने किस कंपनी के साथ 300 अरब डॉलर की साझेदारी की घोषणा की? रिलायंस इंडस्ट्रीज
- एडीसी-150 का उड़ान परीक्षण किस संगठन ने किया? DRDO और भारतीय नौसेना
- अनन्त राणा ने फुल आयरनमैन ट्रायथलॉन कहाँ पूरा किया? न्यूजीलैंड
- चक्रवात दितवाहा के बाद भारत ने किस देश में बेली पुल बनाना शुरू किया? श्रीलंका
- आहार अंतर्राष्ट्रीय खाद्य एवं आतिथ्य मेले के 40वें संस्करण का उद्घाटन किसने किया? पीयूष गोयल
- स्वच्छता निगरानी को मजबूत करने के लिए SMART डिजिटल टूल किसने लॉन्च किया? दिल्ली छावनी बोर्ड
- राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक 2026 का दूसरा संस्करण किसने जारी किया? नीति आयोग
- विश्व की पहली सटीक ग्लूकोमा सर्जरी कहाँ की गई? आर्मी अस्पताल, दिल्ली
- अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) ने क्या जारी करने का निर्णय लिया? आपातकालीन तेल भंडार
- कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं पर वैश्विक सम्मेलन 2026 का उद्घाटन किसने किया? द्रौपदी मुर्मु
- “ड्रिल और वायु निगरानी” पहल शुरू करने की योजना किस राज्य ने बनाई है? गुजरात
- नए आयकर नियम 2026 का मुख्य उद्देश्य क्या है? पारदर्शिता बढ़ाना
- जोस जोसेफ कुट्टूर को किस बैंक में नियुक्त किया गया? इंडियन बैंक
- भारत ने ग्लोबल नेटवर्क की कौन-सी बैठक की मेजबानी की? 12वीं
- 24वीं राष्ट्रीय पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2026 में स्वर्ण पदक किसने जीता? कृपा मेरो
- गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड ने भारतीय नौसेना को कितने पोत सौंपे हैं? तीन
- टॉम सूजी को किस संगठन में उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया? भारत और भारतीय-अमेरिकी मामलों पर कांग्रेस कॉकस

- हाल ही में प्रमुख नौकरशाही फेरबदल किस क्षेत्र में किया गया? मंत्रालय
- भारत-अल्जीरिया विदेश कार्यालय परामर्श का कौन-सा संस्करण आयोजित हुआ? सातवाँ
- रक्षा मंत्रालय ने भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के साथ किसके लिए 1950 करोड़ रुपये का अनुबंध किया? रडार
- RBI ने निवेश मानदंडों के कार्यान्वयन को कितने समय के लिए स्थगित किया? 3 महीने
- "Tides of Time" पुस्तक का विमोचन किसने किया? जगदीप धनखड़
- मार्च 2026 में GST संग्रह कितना रहा? 2 लाख करोड़
- साधना सप्ताह 2026 किसके लिए शुरू किया गया? सिविल सेवकों
- RBI कितने मूल्य की सरकारी प्रतिभूतियों की नीलामी करेगा? ₹29,000 करोड़
- "मालवन" किससे संबंधित है? पनडुब्बी रोधी युद्धपोत
- वस्त्र मंत्रालय ने किस योजना का विस्तार किया? कर छूट
- लोकसभा ने किस विधेयक को मंजूरी दी? जन विश्वास (संशोधन) विधेयक 2026
- वर्ष 2028 की 'विश्व इंडोर एथलेटिक्स चैंपियनशिप' की मेजबानी के लिए भारत के किस शहर को चुना गया है? भुवनेश्वर
- मार्च 2026 में 'स्टॉकहोम वाटर प्राइज' से किसे सम्मानित किया गया? प्रोफेसर कावेह मदनी
- मार्च 2026 में किस देश ने दुनिया की पहली 'फ्रेट-ओनली' (केवल माल ढुलाई) बुलेट ट्रेन लॉन्च की? जापान
- सेबी (SEBI) द्वारा अनधिकृत वित्तीय सलाहकारों की निगरानी के लिए किस AI सिस्टम का उपयोग शुरू किया गया है? सुदर्शन AI
- भारत के किस राज्य में मार्च 2026 में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पहले चरण का उद्घाटन हुआ? उत्तर प्रदेश
- किस भारतीय खिलाड़ी को मार्च 2026 में 'वर्ल्ड आर्चरी' द्वारा वर्ष 2025 की सर्वश्रेष्ठ पैरा-तीरंदाज घोषित किया गया? शीतल देवी
- 'द्वीप शक्ति' (Dweep Shakti) अभ्यास, जो मार्च 2026 में आयोजित हुआ, किन सेनाओं के बीच एक संयुक्त अभ्यास था? भारत की तीनों सेनाएं (Tri-service exercise)
- पारंपरिक 'स्टिच्ड' (सिलाई की हुई) तकनीक से निर्मित किस भारतीय समुद्री जहाज ने मार्च 2026 में मस्कट की यात्रा पूरी की? INSV कौंडिन्य
- मार्च 2026 में पारित 'ट्रांसजेंडर व्यक्ति संशोधन विधेयक' का मुख्य उद्देश्य क्या है? ट्रांसजेंडर श्रेणी को पुनः परिभाषित करना

मार्च माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ

मार्च माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रेरणादायी हस्तियाँ

(1.) जनरल बिपिन रावत (16 मार्च, 1958)

पौड़ी गढ़वाल में जन्मे जनरल बिपिन रावत भारतीय सैन्य इतिहास के एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व थे, जिन्होंने देश के पहले **चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS)** के रूप में कार्य किया। नेशनल डिफेंस एकेडमी और इंडियन मिलिट्री एकेडमी के पूर्व छात्र रहे रावत को 'स्वॉर्ड ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया था और वे 11 गोरखा राइफल्स में कमीशन हुए थे। उन्होंने दशकों तक उच्च ऊंचाई वाले युद्ध और आतंकवाद विरोधी अभियानों का नेतृत्व किया। उन्हें 2016 के सर्जिकल स्ट्राइक के रणनीतिकार के रूप में जाना जाता है और भारतीय सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण में उनके योगदान के लिए मरणोपरांत **पद्म विभूषण** से सम्मानित किया गया।

(2.) मुनीश चंद्र जोशी (30 मार्च, 1935)

हल्द्वानी के रहने वाले मुनीश चंद्र जोशी एक प्रतिष्ठित पुरातत्वविद् थे, जो **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के महानिदेशक के पद तक पहुँचे। अपने पूरे करियर के दौरान, उन्होंने भारत की विशाल सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और दस्तावेजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्राचीन स्मारकों और ऐतिहासिक स्थलों के अध्ययन के प्रति उनके विद्वतापूर्ण दृष्टिकोण ने आधुनिक संरक्षण नीतियों को आकार देने में मदद की, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि भारतीय उपमहाद्वीप के वास्तुशिल्प चमत्कारों को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सके।

(3.) खड़ग सिंह वल्दिया (20 मार्च, 1937)

पिथौरागढ़ की जड़ों वाले खड़ग सिंह वल्दिया एक विश्व प्रसिद्ध भूविज्ञानी और पर्यावरण वैज्ञानिक थे, जिन्होंने हिमालय के भूगर्भीय विकास को समझने में अग्रणी भूमिका निभाई। उनके गहन शोध ने ही मसूरी की पहाड़ियों में हानिकारक चूना पत्थर खनन पर प्रतिबंध लगाने का वैज्ञानिक आधार प्रदान किया था। उन्होंने देहरादून में **वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान** की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में भी सेवा दी। उन्हें विज्ञान और पर्यावरण के क्षेत्र में उनके अतुलनीय योगदान के लिए **पद्म श्री** और **पद्म भूषण** से नवाजा गया।

(4.) चंद्र सिंह राही (28 मार्च, 1942)

इन्हें उत्तराखंड लोक संगीत का **"भीष्म पितामह"** कहा जाता है। इनका जन्म पौड़ी गढ़वाल के गिवाली गांव में हुआ था। वे एक प्रसिद्ध गायक, संगीतकार और कवि थे, जिन्होंने 2,500 से अधिक पारंपरिक गीतों का संरक्षण किया। उनका लोकप्रिय गीत *"फ्योंलड़िया"* (Fyonladiya) आज भी बहुत मशहूर है।

(5.) अर्चना पूरन सिंह (26 मार्च, 1962)

देहरादून के एक पंजाबी परिवार में जन्मी अर्चना पूरन सिंह बॉलीवुड और टेलीविजन जगत का एक जाना-माना नाम हैं, जो अपनी संक्रामक हंसी और बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग के लिए मशहूर हैं। उन्होंने 1987 की फिल्म *जलवा* से अपनी पहचान बनाई और बाद में फिल्म *कुछ कुछ होता है* में 'मिस ब्रिगेंज़ा' के अपने आइकोनिक किरदार से घर-घर में लोकप्रिय हो गईं। अभिनय के अलावा, उन्होंने 'द कपिल शर्मा शो' जैसे बड़े कॉमेडी शो में एक जज और स्थायी अतिथि के रूप में एक सफल करियर बनाया है, और वे आज भी दून घाटी की रचनात्मक प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करती हैं।

(6.) सर्वदमन डी. बनर्जी (14 मार्च, 1965)

इनका जन्म ऋषिकेश के पास **मगरवाड़ा** में हुआ था। उन्हें रामानंद सागर के ऐतिहासिक धारावाहिक *कृष्णा* में भगवान कृष्ण की अविस्मरणीय भूमिका के लिए विश्व स्तर पर पहचान मिली। अभिनय के अलावा, उन्होंने *आदि शंकराचार्य* (1983) जैसी राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मों में भी काम किया। वर्तमान में, वे ऋषिकेश में रहकर आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करते हैं और 'पंख' (Pankh) नामक एनजीओ के माध्यम से पहाड़ी क्षेत्र के वंचित बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए समर्पित हैं।

(7.) बाबा हरि दास (26 मार्च, 1923)

उत्तराखंड के **अल्मोड़ा** में जन्मे एक विश्व प्रसिद्ध योग गुरु, मौनी साधु और विद्वान थे, जिन्होंने 1952 से अपने जीवन के अंत तक लगभग 66 वर्षों तक पूर्ण मौन का व्रत रखा था। वे केवल एक छोटी स्लेट पर लिखकर संवाद करते थे और उन्होंने अष्टांग योग, आयुर्वेद और सांख्य दर्शन पर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। उन्होंने अमेरिका और कनाडा में 'माउंट मैडोना सेंटर' जैसे प्रसिद्ध आध्यात्मिक केंद्रों की स्थापना की प्रेरणा दी, लेकिन उनका सबसे महत्वपूर्ण मानवीय कार्य हरिद्वार के पास **'श्री राम आश्रम'** की स्थापना था, जहाँ उन्होंने अनाथ और उपेक्षित बच्चों के लिए एक घर और विद्यालय बनाया।

(8.) भावना खत्री (24 मार्च, 1987)

पिथौरागढ़ में जन्मी भावना खत्री एक लोकप्रिय टेलीविजन अभिनेत्री हैं, जिन्होंने अपनी बहुमुखी अभिनय क्षमताओं से भारतीय सोप ओपेरा उद्योग में एक विशेष स्थान बनाया है। उन्हें *बड़ी दूर से आए हैं*, *खिड़की* और *जमुनिया* जैसे हिट शो में उनके किरदारों के लिए पहचाना जाता है, जहाँ उन्होंने अक्सर मजबूत इरादों वाले पात्र निभाए हैं। कुमाऊं की पहाड़ियों से मुंबई के टेलीविजन सेटों तक का उनका सफर उत्तराखंड के कई उभरते कलाकारों के लिए एक बड़ी प्रेरणा है।

मार्च माह के
प्रेरणादायी व्यक्तित्व
एक जीवन परिचय

जनरल बिपिन रावत
उत्तराखण्ड का गौरव

उत्तराखण्ड की पावन धरती,
जिसे 'देवभूमि' के साथ-साथ 'वीरभूमि' के नाम से भी जाना जाता है,
ने सदियों से भारत माता की रक्षा के लिए अपने सर्वश्रेष्ठ पुत्रों को समर्पित किया है। इन्हीं महान विभूतियों में जनरल बिपिन रावत का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वे न केवल उत्तराखण्ड के गौरव थे, बल्कि स्वतंत्र भारत के सैन्य इतिहास के सबसे प्रभावशाली और क्रांतिकारी सैन्य सुधारक के रूप में उभरे। एक सैनिक के रूप में उनके 43 वर्षों के शानदार करियर ने भारतीय सेना को एक नई दिशा दी और देश के पहले 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ' (सीडीएस) के रूप में उन्होंने सेना के तीनों अंगों के एकीकरण की जो नींव रखी, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बनी रहेगी।

जनरल बिपिन रावत का जन्म 16 मार्च 1958 को उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल जिले के सैंज गांव में एक प्रतिष्ठित हिंदू गढ़वाली राजपूत परिवार में हुआ था। सैन्य सेवा उनके रक्त में थी; वे अपने परिवार की तीसरी पीढ़ी के सैन्य अधिकारी थे। उनके दादा ने भी भारतीय सेना में अपनी सेवा दी थी, और उनके पिता, लक्ष्मण सिंह रावत, भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट जनरल के पद तक पहुँचे और सेना के उप प्रमुख (वाइस चीफ) के रूप में सेवानिवृत्त हुए। बचपन से ही बिपिन रावत ने अपने पिता के अनुशासन और देशभक्ति को आत्मसात किया। उनकी माता उत्तरकाशी जिले की थीं और पूर्व विधायक किशन सिंह परमार की सुपुत्री थीं, जिसने उन्हें सार्वजनिक सेवा और नेतृत्व के मूल्यों से भी परिचित कराया। उत्तराखण्ड की पहाड़ियों में पले-बढ़े होने के कारण उनके भीतर कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने और अडिग रहने की स्वाभाविक क्षमता विकसित हुई, जो बाद में उनके सैन्य जीवन का आधार बनी।

शैक्षिक योग्यता और अकादमिक उत्कृष्टता

जनरल रावत की शिक्षा अकादमिक कठोरता और सैन्य प्रशिक्षण का एक अनूठा मिश्रण थी। उन्होंने देहरादून के कैम्ब्रियन हॉल स्कूल और शिमला के सेंट एडवर्ड स्कूल से अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की। इसके पश्चात, वे राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA), खडकवासला और भारतीय सैन्य अकादमी (IMA), देहरादून में शामिल हुए। IMA में उनके असाधारण प्रदर्शन के लिए उन्हें 'स्वॉर्ड ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया, जो किसी भी कैडेट के लिए सर्वोच्च सम्मान माना जाता है।

बिपिन रावत केवल एक युद्ध-कौशल में निपुण सैनिक ही नहीं थे, बल्कि एक गहरे विचारक और विद्वान भी थे। उन्होंने अपनी सेवा के दौरान अकादमिक गतिविधियों को जारी रखा और मद्रास विश्वविद्यालय से रक्षा अध्ययन में एम.फिल. (M.Phil.) की डिग्री प्राप्त की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के फोर्ट लेवेनवर्थ, कंसास में स्थित 'यूनाइटेड स्टेट्स आर्मी कमांड एंड जनरल स्टाफ कॉलेज' से उच्च कमान पाठ्यक्रम (Higher Command Course) पूरा किया। उनकी अकादमिक उपलब्धियों का चरमोत्कर्ष 2011 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा प्रदान की गई पी.एच.डी. (Ph.D.) थी, जो उन्होंने सैन्य-मीडिया सामरिक अध्ययन (Military-Media Strategic Studies) पर अपने शोध के लिए प्राप्त की थी।

सैन्य करियर का विकास: गोरखा राइफल्स से रणनीतिक कमान तक

16 दिसंबर 1978 को बिपिन रावत को 11 गोरखा राइफल्स की 5वीं बटालियन (5/11 GR) में कमीशन दिया गया, यह वही इकाई थी जिसमें उनके पिता ने भी सेवा दी थी। यह उनके सैन्य जीवन की एक ऐसी शुरुआत थी जिसने उन्हें दुर्गम हिमालयी चोटियों से लेकर रेगिस्तान और विदेशी जंगलों तक हर तरह के युद्ध क्षेत्र का अनुभव प्रदान किया।

अपने करियर के शुरुआती वर्षों में, कैप्टन के रूप में, रावत की बटालियन को 1987 में सुमदोरोंग चू घाटी में चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (PLA) के खिलाफ तैनात किया गया था। 1962 के युद्ध के बाद वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर यह पहली प्रमुख सैन्य मुठभेड़ थी। इस तैनाती ने उन्हें चीन की सैन्य रणनीति को समझने का प्रत्यक्ष अनुभव दिया, जो बाद के वर्षों में उनके रक्षा निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। एक कर्नल के रूप में, उन्होंने अरुणाचल प्रदेश के किबिथू में वास्तविक नियंत्रण रेखा के साथ पूर्वी क्षेत्र में अपनी बटालियन (5/11 GR) की कमान संभाली। किबिथू जैसे रणनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में उनके नेतृत्व ने क्षेत्र की सुरक्षा संरचना को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद में, ब्रिगेडियर के रूप में, उन्होंने जम्मू-कश्मीर के सोपोर में 5 सेक्टर राष्ट्रीय राइफल्स की कमान संभाली, जो आतंकवाद विरोधी अभियानों

का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। यहाँ उन्होंने न केवल उग्रवाद को नियंत्रित किया, बल्कि स्थानीय आबादी के साथ विश्वास निर्माण के उपायों पर भी ध्यान दिया।

अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा: कांगो में संयुक्त राष्ट्र मिशन

जनरल रावत की नेतृत्व क्षमता का लोहा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तब माना गया जब उन्होंने कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) में संयुक्त राष्ट्र शांति सेना (MONUSCO) के तहत एक बहुराष्ट्रीय ब्रिगेड की कमान संभाली। उनके आगमन के कुछ ही समय बाद, कांगो के पूर्वी हिस्से में एक बड़ा सैन्य विद्रोह हुआ जिसने क्षेत्रीय राजधानी गोमा को खतरे में डाल दिया था। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए रावत ने त्वरित प्रतिक्रिया दी और उत्तरी किवु ब्रिगेड को सुदृढ़ किया, जो कुल मिशन शक्ति के लगभग आधे हिस्से के लिए जिम्मेदार थी। उन्होंने न केवल सशस्त्र समूहों के खिलाफ प्रभावी सैन्य कार्रवाई की, बल्कि स्थानीय समुदायों की सुरक्षा के लिए संवेदनशील कार्यक्रमों का भी समन्वय किया। उनके नेतृत्व में गोमा शहर को गिरने से बचाया गया और मुख्य विद्रोही समूहों को बातचीत की मेज पर लाने के लिए प्रेरित किया गया। उनकी इन सेवाओं के लिए उन्हें दो बार 'फोर्स कमांडर कमेंडेशन' से सम्मानित किया गया।

27वें सेना प्रमुख के रूप में क्रांतिकारी नेतृत्व

31 दिसंबर 2016 को जनरल बिपिन रावत ने भारत के 27वें थल सेनाध्यक्ष (COAS) के रूप में पदभार ग्रहण किया। उनकी नियुक्ति ने सैन्य हलकों में काफी ध्यान आकर्षित किया क्योंकि सरकार ने दो वरिष्ठ अधिकारियों की वरिष्ठता को लांघकर उन्हें चुना था। यह निर्णय इस तथ्य पर आधारित था कि रावत के पास आतंकवाद विरोधी अभियानों और सीमा प्रबंधन का व्यापक अनुभव था, जो तत्कालीन सुरक्षा चुनौतियों के लिए आवश्यक था।

सेना प्रमुख के रूप में जनरल रावत ने भारत की सैन्य मुद्रा को 'रक्षात्मक' से बदलकर 'आक्रामक-रक्षात्मक' कर दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत अपनी सीमाओं की पवित्रता बनाए रखने के लिए बल प्रयोग से नहीं हिचकिचाएगा।

म्यांमार सीमा पर सर्जिकल स्ट्राइक (2015): हालांकि यह उनके सेना प्रमुख बनने से पहले हुआ था, लेकिन दीमापुर स्थित III कोर के कमांडर के रूप में उन्होंने 2015 के म्यांमार सीमा पार अभियान (ऑपरेशन हॉट परस्यूट) की योजना बनाने और उसे क्रियान्वित करने में मुख्य भूमिका निभाई थी। यह उग्रवादियों द्वारा मणिपुर में 18 भारतीय सैनिकों की हत्या का प्रतिशोध था। 21 पैरा (स्पेशल फोर्सेज) के 70 कमांडो ने सीमा पार कर उग्रवादियों के ठिकानों को नष्ट कर दिया, जिससे भारत की 'हॉट परस्यूट' नीति की पुष्टि हुई।

2016 की सर्जिकल स्ट्राइक: उरी हमले के जवाब में 29 सितंबर 2016 को नियंत्रण रेखा के पार आतंकी लॉन्च पैड्स पर की गई सर्जिकल स्ट्राइक के दौरान रावत सेना के उप प्रमुख (Vice Chief) थे और पूरे ऑपरेशन के केंद्र में थे।

डोकलाम गतिरोध (2017): सेना प्रमुख के रूप में, रावत ने 2017 में चीन के साथ 73 दिनों तक चले डोकलाम गतिरोध के दौरान भारतीय सेना का नेतृत्व किया। भारतीय सेना ने भूटान के क्षेत्र में चीन द्वारा अवैध सड़क निर्माण को रोकने के लिए अपनी स्थिति मजबूती से बनाए रखी, जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का कद बढ़ा।

बालाकोट एयर स्ट्राइक (2019): पुलवामा हमले के बाद बालाकोट में जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी ठिकानों पर की गई कार्रवाई के दौरान वे निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा थे और उन्होंने थल सेना को किसी भी आकस्मिक स्थिति के लिए तैयार रखा था।

जनरल रावत ने भविष्य के युद्धों की प्रकृति को भांपते हुए सेना में संरचनात्मक बदलावों की शुरुआत की। उन्होंने 'इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप्स' (IBGs) की अवधारणा पेश की, जो कि परंपरागत डिवीजनों के बजाय छोटे, अधिक फुर्तीले और आत्म-निर्भर युद्धक समूह हैं । इसके अलावा, उन्होंने सेना में 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा दिया ताकि विदेशी उपकरणों पर निर्भरता कम की जा सके।

भारत के प्रथम 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ' (CDS) के रूप में भूमिका

01 जनवरी 2020 को जनरल बिपिन रावत भारत के पहले 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ' नियुक्त किए गए। यह 1999 की कारगिल समीक्षा समिति की सिफारिशों के बाद भारतीय रक्षा संरचना में किया गया सबसे बड़ा सुधार था। सीडीएस के रूप में, उन्हें सरकार के 'एकल-बिंदु सैन्य सलाहकार' (Single-point military advisor) की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। सीडीएस की नियुक्ति के साथ ही रक्षा मंत्रालय के भीतर 'सैन्य मामलों के विभाग' (Department of Military Affairs - DMA) का गठन किया गया, जिसके सचिव जनरल रावत बने। इसका उद्देश्य नागरिक-सैन्य तालमेल को बढ़ाना और रक्षा बजट के इष्टतम उपयोग को सुनिश्चित करना था। जनरल रावत ने तीनों सेनाओं के बीच 'संयुक्तता' (Jointness) को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाया।

जनरल रावत "आत्मनिर्भर भारत" के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत विदेशी उपकरणों की "उधार ली गई ताकत" पर युद्ध नहीं लड़ सकता। उन्होंने अगस्त 2020 में 101 हथियारों और प्लेटफार्मों की एक 'नकारात्मक सूची' (Negative List) की घोषणा की, जिनके आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया ताकि घरेलू निर्माताओं को अवसर मिल सके। उन्होंने टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स, एलएंडटी, महिंद्रा डिफेंस और कल्याणी ग्रुप जैसी भारतीय कंपनियों को रक्षा क्षेत्र में अपनी

भूमिका बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके प्रयासों के कारण भारत आज रक्षा उपकरणों के आयातक से निर्यातक बनने की ओर अग्रसर है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने "अग्निपथ" योजना की नींव रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे वे भारतीय सेना के मानव संसाधन ढांचे में स्वतंत्रता के बाद का सबसे बड़ा सुधार मानते थे।

उत्तराखण्ड के विकास और पलायन रोकने हेतु दूरदृष्टि

जनरल बिपिन रावत का अपने गृह राज्य उत्तराखण्ड से गहरा लगाव था। वे केवल एक सैन्य रणनीतिकार नहीं थे, बल्कि राज्य की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं, विशेष रूप से पहाड़ों से हो रहे 'पलायन' को लेकर चिंतित थे। वे अक्सर कहते थे कि सीमावर्ती गांवों से पलायन सुरक्षा के दृष्टिकोण से चिंताजनक है क्योंकि वहां रहने वाले लोग हमारे "प्रथम रक्षा पंक्ति" (First line of defence) हैं। उन्होंने उत्तराखण्ड सरकार के साथ मिलकर कई परियोजनाओं पर काम किया:

अखरोट और फल उद्यान परियोजना: उन्होंने चमोली जैसे सीमावर्ती जिलों में 4 लाख अखरोट के पेड़ लगाने के लिए सेना की मदद सुनिश्चित की ताकि स्थानीय लोगों को रोजगार मिल सके और वे अपने गांवों में ही रहें।

होमस्टे और पर्यटन: उन्होंने पूर्व सैनिकों को गांवों में 'होमस्टे' शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि सामुदायिक पर्यटन के माध्यम से अर्थव्यवस्था को मजबूती मिले।

स्वास्थ्य सेवाएं: पहाड़ों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी को दूर करने के लिए उन्होंने सेवानिवृत्त सैन्य डॉक्टरों को राज्य की स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने की पहल की।

मंदारिन (चीनी) भाषा शिक्षण: उन्होंने 2021 में दून विश्वविद्यालय के कुलपति के साथ चर्चा की थी कि उत्तराखण्ड के सरकारी स्कूलों के छात्रों को चीनी भाषा सिखाई जानी चाहिए। इसका उद्देश्य छात्रों को अंतरराष्ट्रीय नौकरियों के लिए तैयार करने के साथ-साथ सीमा सुरक्षा में भी उनकी सहायता प्राप्त करना था। उनके इसी विजन को आगे बढ़ाते हुए उत्तराखण्ड सरकार ने सीमावर्ती क्षेत्रों में "हिम प्रहरी" बल गठित करने का निर्णय लिया, जिसमें 10,905 कर्मियों को तैनात किया जा रहा है।

पैतृक गांव के प्रति लगाव

जनरल रावत अपनी सेवानिवृत्ति के बाद अपने पैतृक गांव सैंज में बसना चाहते थे। उन्होंने वहां घर बनाने के लिए जमीन भी चिन्हित कर ली थी और सड़क कनेक्टिविटी के बारे में लगातार जानकारी लेते रहते थे। उनके चाचा भरत सिंह रावत के अनुसार, वे पहाड़ों के विकास के लिए सरकार की मदद से सक्रिय रूप से काम करना चाहते थे।

दुखद अंत: 8 दिसंबर 2021

देश के लिए एक अपूरणीय क्षति 8 दिसंबर 2021 को हुई, जब जनरल बिपिन रावत, उनकी पत्नी मधुलिका रावत और 11 अन्य सैन्य अधिकारी एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना का शिकार हो गए। भारतीय वायुसेना का MI-17V5 हेलीकॉप्टर तमिलनाडु के कुन्नूर के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। जनरल रावत वेलिंगटन स्थित 'डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज' में एक व्याख्यान देने जा रहे थे। इस घटना ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। 10 दिसंबर 2021 को दिल्ली के बरार स्क्वायर श्मशान घाट पर उनका पूर्ण सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। उत्तराखण्ड में तीन दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की गई और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उन्हें "उत्तराखण्ड का ऐसा बेटा" बताया जिस पर राज्य को हमेशा गर्व रहेगा।

सम्मान, पुरस्कार और शाश्वत विरासत

जनरल रावत को उनकी विशिष्ट सेवा और अदम्य साहस के लिए अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

पद्म विभूषण (मरणोपरांत, 2022): गणतंत्र दिवस 2022 की पूर्व संध्या पर उन्हें देश के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान से नवाजा गया।

परम विशिष्ट सेवा पदक (PVSM): उत्कृष्ट सेवा के लिए सैन्य सम्मान।

उत्तम युद्ध सेवा पदक (UYSM): युद्धकाल की विशिष्ट सेवा के लिए (III कोर की कमान के दौरान)।

अति विशिष्ट सेवा पदक (AVSM): 19वीं इन्फैंट्री डिवीजन (उरी) की कमान के लिए।

युद्ध सेवा पदक (YSM): सक्रिय परिचालन कमान के लिए।

सेना पदक (SM): कर्तव्य के प्रति निष्ठा और वीरता के लिए।

जनरल रावत के नाम पर संस्थान और हालिया स्मारक (2023-2026)

उनकी स्मृति को स्थायी बनाने के लिए देश भर में निरंतर कदम उठाए जा रहे हैं:

जनरल बिपिन रावत मिलिट्री गैरिसन, किबिथू: अरुणाचल प्रदेश के किबिथू सैन्य शिविर और वालॉन्ग-किबिथू सड़क (22 किमी) का नाम उनके नाम पर रखा गया है।

जनरल बिपिन रावत सैनिक स्कूल, मैनपुरी: उत्तर प्रदेश सरकार ने मैनपुरी स्थित सैनिक स्कूल का नाम बदलकर उनके नाम पर किया है।

जनरल बिपिन रावत ऑडिटोरियम और प्रतिमा (गोरखपुर): दिसंबर 2025 में उनकी चौथी पुण्यतिथि पर गोरखपुर के सैनिक स्कूल में एक भव्य ऑडिटोरियम और प्रतिमा का उद्घाटन किया गया।

जनरल बिपिन रावत पुस्तकालय (कोटद्वार): सितंबर 2025 में कोटद्वार में छात्रों और युवाओं के लिए उनके नाम पर एक आधुनिक पुस्तकालय समर्पित किया गया।

साहित्यिक श्रद्धांजलि: 2023 में रचना बिष्ट रावत द्वारा लिखित उनकी जीवनी "बिपिन: द मैन बिहाइंड द यूनिफॉर्म" प्रकाशित हुई, जो उनके व्यक्तिगत और सैन्य जीवन पर प्रकाश डालती है।

एक महान योद्धा की अविस्मरणीय यात्रा

जनरल बिपिन रावत का जीवन एक सैनिक के लिए केवल वीरता की कहानी नहीं है, बल्कि एक विजनरी नेतृत्व का उदाहरण है जिसने सदियों पुरानी सैन्य परंपराओं को आधुनिक समय की जरूरतों के अनुरूप ढालने का साहस दिखाया। एक 'जवान के जनरल' (Soldier's General) के रूप में, वे हमेशा अपने सैनिकों के कल्याण के लिए तत्पर रहे। उत्तराखण्ड के लिए वे एक ऐसे नायक थे जिन्होंने पहाड़ों की कठिन परिस्थितियों को अपनी ताकत बनाया और दुनिया के सबसे शक्तिशाली सैन्य बलों में से एक का नेतृत्व किया। उनका अधूरा मिशन, विशेष रूप से थिएटर कमांड का गठन और पूर्ण सैन्य आत्मनिर्भरता, अब भारतीय रक्षा रणनीति का मुख्य आधार बन चुका है। जनरल रावत का जाना न केवल उत्तराखण्ड के लिए बल्कि पूरे भारत के लिए एक अपूरणीय क्षति थी, लेकिन उनके द्वारा शुरू किए गए सुधार और उनकी 'राष्ट्र-प्रथम' की विचारधारा आने वाली कई पीढ़ियों तक भारतीय सेना की कार्यसंस्कृति को प्रभावित करती रहेगी। वे सच्चे अर्थों में 'उत्तराखण्ड के गौरव' और 'भारत के रक्षक' थे, जिनकी विरासत हिमालय की तरह अटल और गौरवशाली है।

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग

उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक आत्मा के अन्वेषक

चन्द्र सिंह राही

का लोक संगीत एवं गायन में युगांतरकारी योगदान

उत्तराखंड की पावन धरा, जिसे देवभूमि के रूप में पूजा जाता है, केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण लोक सांस्कृतिक विरासत के लिए भी जानी जाती है। इस सांस्कृतिक विरासत के सबसे जाज्वल्यमान नक्षत्रों में से एक नाम 'चन्द्र सिंह राही' जी का है। राही जी केवल एक लोकगायक नहीं थे, बल्कि वे एक संस्था, एक शोधकर्ता, एक संगीतज्ञ, एक कवि और सबसे बढ़कर उत्तराखंड की विलुप्त होती लोक विधाओं के पुनरुद्धारकर्ता थे। उन्हें 'उत्तराखंड लोक संगीत का भीष्म पितामह' कहा जाता है, जो उनके सात दशकों के अथक समर्पण और साधना का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उनके कार्य का विस्तार मध्य हिमालय की कंदराओं से लेकर आधुनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म तक फैला हुआ है, जहाँ उन्होंने प्राचीन जागरों, पंवाड़ों और खुदेड़ गीतों को एक नया जीवन प्रदान किया।

चन्द्र सिंह राही का जन्म 28 मार्च 1942 को संयुक्त प्रांत (अब उत्तराखंड) के पौड़ी गढ़वाल जिले के मऊददस्युं पट्टी के अंतर्गत आने वाले गिवाली गांव में हुआ था। उनका मूल नाम चन्द्र सिंह नेगी था, लेकिन बाद में उनके गुरु कन्हैयालाल डंडरियाल ने उनकी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति और संगीत की खोज में निरंतर यात्रा करने के स्वभाव को देखते हुए उन्हें 'राही' उपनाम दिया।

राही जी का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जहाँ संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवन की अनिवार्य पद्धति और आध्यात्मिक साधना का अंग था। वे एक पारंपरिक 'जागरी' परिवार (जिन्हें 'घड़ियाल' भी कहा जाता है) से ताल्लुक रखते थे। यह वह वर्ग है जो सदियों से उत्तराखंड के गांवों में देवताओं के आह्वान (जागर) और वीर गाथाओं (पंवाड़े) के गायन और वादन का कार्य करता आया है। उनके पिता, दिलबर सिंह नेगी, अपने समय के एक सिद्ध कलाकार और जागर गायक थे। बचपन से ही राही जी ने अपने पिता को डमरू, थाली और हुरुकी जैसे पारंपरिक वाद्यों पर देवताओं का आह्वान करते देखा और सुना था।

राही जी के संगीत की नींव उनके पिता के सान्निध्य में पड़ी, जहाँ उन्होंने पहाड़ी संगीत की सूक्ष्मताओं, लोक वाद्यों की ताल और हिमालयी संस्कृति की जटिलताओं को आत्मसात किया। वे अपने पिता के साथ विभिन्न अनुष्ठानों में जाते थे और वहाँ पारंपरिक वाद्यों के साथ संगत करते थे। यह अनुभव उनके लिए किसी औपचारिक विश्वविद्यालय से कम नहीं था। हालांकि, राही जी का दृष्टिकोण केवल पारंपरिक ज्ञान तक सीमित नहीं था। उन्होंने महसूस किया कि लोक संगीत को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए शास्त्रीय संगीत का ज्ञान आवश्यक है। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने वयस्क जीवन में केशव अनुरागी और आचार्य बच्चन सिंह जैसे प्रकांड विद्वानों से भारतीय शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा ग्रहण की। इस शास्त्रीय प्रशिक्षण ने उन्हें लोक धुनों में छिपे हुए रागों और तालों को पहचानने, उन्हें लिपिबद्ध करने और उनके वैज्ञानिक विश्लेषण की क्षमता प्रदान की। यही कारण था कि वे न केवल एक गायक बने, बल्कि एक ऐसे व्याख्याता के रूप में उभरे जो लोक धुनों के तकनीकी पक्ष को भी समझा सकते थे।

आकाशवाणी और रेडियो युग: उत्तराखंडी स्वर का वैश्विक प्रसार

चन्द्र सिंह राही का करियर उस दौर में शुरू हुआ जब रेडियो जनसंचार का सबसे सशक्त माध्यम था। 1957 में वे रोजगार की तलाश में दिल्ली आ गए थे, जहाँ उन्होंने अपने शुरुआती दिनों में दिल्ली की सड़कों पर बांसुरी बेचकर अपना गुजारा किया। इस कठिन संघर्ष के बावजूद, संगीत के प्रति उनकी निष्ठा अडिग रही। 13 मार्च 1963 को उन्होंने आकाशवाणी (All India Radio) दिल्ली के 'सैनिकों के लिए कार्यक्रम' में अपना पहला गीत "पार वीणा की" प्रस्तुत किया। यह वह ऐतिहासिक क्षण था जब आकाशवाणी पर पहली बार किसी गढ़वाली गायक की आवाज गूंजी थी। इसके बाद 1972 में उन्होंने आकाशवाणी लखनऊ से जुड़कर अपनी गायकी का विस्तार किया। 1970 और 80 के दशक में, जब आकाशवाणी नजीबाबाद स्टेशन की स्थापना हुई, तो राही जी के गीतों ने पूरे उत्तराखंड और प्रवासियों के बीच धूम मचा दी। उनकी आवाज में एक विशेष प्रकार का 'रिंगिंग मेलोडी' (गूंजता हुआ सुरीलापन) था, जो ऊंचे सुरों में भी अपनी माधुर्य नहीं खोता था। प्रसिद्ध जागर सम्राट प्रीतम भरतवाण ने उनके बारे में कहा था कि राही जी की आवाज श्रोताओं पर एक जादुई सम्मोहन (magical spell) पैदा करती थी।

1980 के दशक के बाद जब दूरदर्शन का विस्तार हुआ, तो राही जी ने अपने गायन को एक नए स्तर पर पहुँचाया।

उन्होंने दूरदर्शन पर न केवल लोकगीत गाए बल्कि लोक वाद्यों और नृत्यों पर आधारित कई कार्यक्रमों की रूपरेखा भी तैयार की। उनके कार्यक्रमों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे केवल मनोरंजन नहीं करते थे, बल्कि प्रत्येक गीत या वाद्य यंत्र के पीछे के इतिहास और सांस्कृतिक महत्व को भी विस्तार से समझाते थे। (25)

लोकगीतों का संकलन: एक अद्वितीय सांस्कृतिक कोश

चन्द्र सिंह राही का सबसे महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय योगदान उत्तराखंड के उन लोकगीतों का संरक्षण और संकलन है, जो मौखिक परंपरा (Oral Tradition) के लुप्त होने के साथ समाप्त हो रहे थे। उन्होंने महसूस किया कि नई पीढ़ी अपनी जड़ों से कट रही है और पारंपरिक गायक अब बहुत कम बचे हैं।

राही जी ने अपने पूरे जीवनकाल में उत्तराखंड के सुदूरवर्ती गांवों की यात्रा की और प्राचीन पारंपरिक गीतों का संकलन किया। उनके पास लगभग 2,500 से अधिक ऐसे गीतों का संग्रह था, जो विभिन्न लोक विधाओं का प्रतिनिधित्व करते थे । उनके द्वारा संकलित और संरक्षित प्रमुख लोक विधाएं इस प्रकार हैं:

जागर (Jaagar): देवताओं और स्थानीय लोक देवताओं के आह्वान के गीत। राही जी स्वयं एक जागरी परिवार से थे, इसलिए उन्हें जागरों की सूक्ष्म लय और उनके अनुष्ठानिक महत्व का गहरा ज्ञान था।

पंवाड़े (Panwara): मध्यकालीन वीर गाथाएं। ये गीत उत्तराखंड के इतिहास और वीरता के प्रतीक हैं, जिन्हें राही जी ने बड़ी कुशलता से लिपिबद्ध किया।

खुदेड़ गीत (Khuder Geet): विरह और स्मृतियों के गीत, जो अक्सर नवविवाहित महिलाओं द्वारा अपने मायके की याद में गाए जाते हैं।

संस्कार गीत (Sanskar Geet): जन्म, मुंडन (चूड़ाकर्म), विवाह और अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर गाए जाने वाले मांगलिक गीत।

नृत्य गीत (Dance Songs): थड्या, चौंफला, झौड़ा और चैतवाली जैसे नृत्य गीत, जो सामूहिक उत्सवों का हिस्सा होते हैं।

पर्वतीय गाथाएं: महाभारत की कथाओं पर आधारित पांडवाणी और स्थानीय किंवदंतियों पर आधारित गीत ।

उनकी यह खोज और संकलन केवल कागजों तक सीमित नहीं था। उन्होंने इन गीतों को अपनी आवाज दी और इनके मूल स्वरूप को सुरक्षित रखने के लिए कड़ा संघर्ष किया। वे 'बॉलीवुड' शैली के प्रभाव और लोक संगीत के आधुनिकीकरण के सख्त खिलाफ थे, जिसे वे 'बॉलीवुडाइजेशन' और 'वीसीडी कल्चर' कहते थे।

लोक वाद्यों का संरक्षण और वादन में महारत

चन्द्र सिंह राही को केवल उनकी आवाज के लिए ही नहीं, बल्कि उनके अद्भुत वादन कौशल के लिए भी जाना जाता था। वे संभवतः उत्तराखंड के एकमात्र ऐसे कलाकार थे जो 36 से अधिक पारंपरिक लोक वाद्यों को न केवल बजा सकते थे, बल्कि उनके निर्माण और तकनीकी बारीकियों के ज्ञाता भी थे। राही जी का मानना था कि वाद्ययंत्र लोक संगीत की आत्मा हैं। उन्होंने अपने व्याख्यान-प्रदर्शनों (Lecture-Demonstrations) के माध्यम से दुनिया को बताया कि उत्तराखंड के वाद्य यंत्र कितने उन्नत और प्रभावशाली हैं । उनके द्वारा बजाए जाने वाले प्रमुख वाद्यों में शामिल थे:

ढोल-दमाऊ (Dhol-Damau): वे ढोल के विभिन्न तालों और 'अक्षरों' के विशेषज्ञ थे। वे समझाते थे कि कैसे ढोल की एक विशेष थाप से देवता जागृत होते हैं और कैसे दूसरी थाप से युद्ध का आह्वान होता है।

हुड़की और डौंर (Huruki & Daur): जागर गायन के इन प्रमुख वाद्यों पर उनकी अंगुलियों का जादू देखते ही बनता था। वे इन वाद्यों के माध्यम से जो अनुनाद (Resonance) पैदा करते थे, वह अद्वितीय था।

मोर्चंग (Morchang): यह एक छोटा सा धातु का वाद्य है जिसे दांतों के बीच दबाकर बजाया जाता है। राही जी ने इस लुप्तप्राय वाद्य को पुनः लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

थाली और थाकुली (Thali & Thakuli): साधारण बर्तनों को संगीत वाद्य में बदलने की उनकी कला अद्भुत थी।

बांसुरी और शहनाई: वे इन वायु वाद्यों (Wind Instruments) के माध्यम से पहाड़ी धुनों की कोमलता को अभिव्यक्त करते थे।

राही जी न केवल इन वाद्यों को बजाते थे, बल्कि वे वाद्यों के 'ताल अनुक्रम' (Tala Sequences) और उन ताल प्रतिमानों के भी ज्ञाता थे जो पहाड़ी संगीत के लिए अद्वितीय हैं और जिन्हें शास्त्रीय संगीत के प्रचलित तालों में आसानी से नहीं बांधा जा सकता।

संगीत शास्त्र और लोक-शास्त्रीय समन्वय

चन्द्र सिंह राही की महानता इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने लोक संगीत को केवल 'अनुभव' के रूप में नहीं, बल्कि एक 'विज्ञान' के रूप में देखा। शास्त्रीय संगीत में अपनी शिक्षा के कारण, वे लोक धुनों और शास्त्रीय रागों के बीच सेतु बनाने में सक्षम हुए। राही जी ने अपने शोध के माध्यम से यह सिद्ध किया कि उत्तराखंड के लोक संगीत की अधिकांश धुनें शास्त्रीय रागों पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए, उन्होंने बताया कि कई जागर धुनें राग यमन, भैरव और शिवरंजनी के बहुत करीब हैं। वे अक्सर अपने कार्यक्रमों में यह प्रदर्शित करते थे कि कैसे एक साधारण चरवाहे द्वारा बजाई गई बांसुरी की धुन एक जटिल

शास्त्रीय राग की संरचना का पालन करती है। उन्होंने लोक संगीत के तालों को लिपिबद्ध करने का भी कार्य किया। उन्होंने 'कहरवा' और 'खेमटा' जैसे तालों का उपयोग करते हुए पहाड़ी संगीत की गतिशीलता को समझाया। उनके इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने उत्तराखंड के लोक संगीत को अकादमिक जगत में एक नई प्रतिष्ठा प्रदान की। उनकी अप्रकाशित पांडुलिपि, *A Comprehensive Study of the Songs, Musical Instruments, and Dances of the Central Himalayas*, इस दिशा में उनके गहन शोध का परिणाम थी।

(26)

साहित्यिक योगदान: एक संवेदनशील कवि और गीतकार

राही जी न केवल एक गायक और संगीतकार थे, बल्कि वे एक उच्च कोटि के कवि और गीतकार भी थे। उनके गीतों की शब्द-रचना में पहाड़ की सामाजिक विडंबनाओं, पलायन की पीड़ा, प्रकृति के प्रति प्रेम और लोक-जीवन के प्रति गहरी सहानुभूति झलकती थी।

प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ

उनके लेखन का विस्तार कई पुस्तकों और काव्य संग्रहों में देखने को मिलता है:

दिल को उमाल (Dil Ko Umaal - 1966): यह उनकी पहली कविता संग्रह थी, जिसने उन्हें साहित्य जगत में पहचान दिलाई।

ढई (Dhai - 1980): लोक चेतना और सामाजिक सरोकारों पर आधारित रचनाएं।

रमछोल (Ramchhol - 1981): पारंपरिक छंदों और आधुनिक भावनाओं का मिश्रण।

गीत गंगा (Geet Ganga - 2010): इसमें उनके 126 बेहतरीन गीतों और कविताओं का संग्रह है, जो उनके पूरे जीवन के अनुभवों का निचोड़ है।

राही जी ने गढ़वाली भाषा में पहली 'ग़ज़ल' लिखने और गाने का गौरव भी प्राप्त किया, जिसका शीर्षक था "तेरी मुखड़ी" (Teri Mukhiri)। यह उनकी भाषाई प्रयोगधर्मिता और लोक भाषा को नए आयाम देने की उनकी इच्छा का परिचायक था।

चन्द्र सिंह राही के गीतों ने समय की सीमाओं को लांघ दिया है। उनके द्वारा गाए गए और रचे गए गीत आज भी उत्तराखंड के हर उत्सव, शादी और सांस्कृतिक कार्यक्रम का अभिन्न हिस्सा हैं। उनके एल्बम 'सौली घुरा घुर' (Sauli Ghura Ghur) ने व्यावसायिक रूप से अपार सफलता प्राप्त की थी और वे घर-घर में पहचाने जाने वाले कलाकार बन गए थे।

प्रमुख गीतों का सांस्कृतिक प्रभाव

राही जी के कुछ गीत आज की पीढ़ी के लिए 'एंथम' बन गए हैं:

फ्वा बाघा रे (Fwa Bagha Re): यह एक वीर रस और उल्लास का गीत है, जिसे आज भी हर पहाड़ी युवा बड़े चाव से गाता और सुनता है।

चैता की चैत्वाली (Chaita Ki Chaitwali): यह मूलतः एक आंचरी जागर है, जिसे राही जी ने अपनी विशिष्ट शैली में प्रस्तुत किया था। बाद में अमित सागर द्वारा किए गए इसके रीमेक ने इसे यूट्यूब पर करोड़ों व्यूज दिलाए, लेकिन इसका मूल श्रेय राही जी के संरक्षण कार्य को ही जाता है।

जरा माठु चला दी (Jara Mathu Chala Di): यह एक अत्यंत मधुर नृत्य गीत है, जो उत्तराखंड की लोक संस्कृति की कोमलता को दर्शाता है।

सात समुंदर पार (Saat Samunder Paar): पलायन और विरह की पीड़ा को व्यक्त करने वाला यह गीत आज भी प्रवासियों की आंखों में आंसू ला देता है।

फ्योंलड़िया (Fyonladiya): पहाड़ी फूलों और प्रकृति के सौंदर्य पर आधारित यह गीत राही जी की संवेदनशीलता का प्रमाण है।

उनके कार्यों को 140 से अधिक ऑडियो कैसेटों के माध्यम से प्रसारित किया गया और उन्होंने पूरे भारत में 1,500 से अधिक लाइव प्रस्तुतियाँ दीं।

सामाजिक सरोकार

चन्द्र सिंह राही केवल कला के लिए कला के समर्थक नहीं थे; वे मानते थे कि कलाकार को समाज के प्रति जिम्मेदार होना चाहिए। उन्होंने अपनी कला का उपयोग सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ और भाषाई गौरव को जगाने के लिए किया।

पलायन और पहाड़ की पीड़ा

राही जी के गीतों में उत्तराखंड से होने वाले 'पलायन' का मुद्दा एक आवर्ती विषय (Recurring Theme) रहा है। उन्होंने उन पुरुषों का दर्द गाया जो आजीविका के लिए शहरों में भटक रहे हैं और उन महिलाओं की पीड़ा को स्वर दिया जो गांव में अकेले संघर्ष कर रही हैं । वे स्वयं एक प्रवासी थे, इसलिए उनके गायन में वह प्रामाणिकता और टीस हमेशा महसूस की जा सकती थी।

भाषाई अस्मिता और संरक्षण

वे गढ़वाली और कुमाऊंनी भाषाओं के संरक्षण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने महसूस किया कि भाषाएं मर रही हैं क्योंकि नई पीढ़ी उन्हें बोलने में शर्म महसूस करती है। उन्होंने उत्तराखंड सरकार और भाषा संस्थान से कई बार अनुरोध किया कि लोक भाषाओं को शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में बढ़ावा दिया जाए। उन्होंने 2018 में स्थापित भाषा केंद्रों और स्कूलों में गढ़वाली/कुमाऊंनी सिखाने की नीति से बहुत पहले ही इस दिशा में अलख जगाना शुरू कर दिया था। उनका प्रसिद्ध कथन था, "हम भारतीय हैं, लेकिन यदि हमारी बोली और भाषा विलुप्त हो गई, तो भारत की वह विविधता कहाँ रहेगी जो हमारी असली पहचान है?"।

सम्मान, पुरस्कार और संस्थागत मान्यता

चन्द्र सिंह राही का व्यक्तित्व इतना विराट था कि पुरस्कार और सम्मान उनके सामने छोटे प्रतीत होते थे, फिर भी उनकी कला को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर यथोचित सम्मान मिला।

भीष्म पितामह: उत्तराखंड के लोगों ने उन्हें स्वतः स्फूर्त भाव से लोक संगीत का 'भीष्म पितामह' घोषित कर दिया।

मोहन उप्रेती लोक संस्कृति कला सम्मान: उनके द्वारा लोक संस्कृति के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए।

डॉ. शिवानंद नौटियाल स्मृति पुरस्कार: लोक साहित्य के प्रति उनके योगदान के लिए।

संगीत नाटक अकादमी संचयन (2015): भारत की सर्वोच्च कला संस्था, संगीत नाटक अकादमी ने उनके द्वारा गाए गए गढ़वाल के लोक संगीत को अपने पुरालेख (Archive) के लिए रिकॉर्ड किया और 'संचयन' श्रृंखला के तहत इसे प्रदर्शित किया।

गढ़ भारती और अन्य सम्मान: उन्हें दिल्ली और उत्तर प्रदेश की विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा निरंतर सम्मानित किया गया।

यद्यपि राही जी को वह व्यापक राष्ट्रीय पहचान नहीं मिल पाई जिसके वे हकदार थे, लेकिन उत्तराखंड के लोगों के हृदय में उनका स्थान किसी भी पद्म पुरस्कार से ऊपर है।

पारिवारिक विरासत और सांस्कृतिक निरंतरता

10 जनवरी 2016 को चन्द्र सिंह राही का दिल्ली में निधन हो गया, जिससे उत्तराखंडी लोक संगीत के एक युग का अंत हो गया। उनके निधन पर उत्तराखंड के दिग्गज गायक नरेंद्र सिंह नेगी ने कहा था कि राही जी के जाने से एक ऐसा शून्य पैदा हुआ है जिसे कभी भरा नहीं जा सकेगा। राही जी की विरासत को उनके परिवार ने बहुत ही समर्पण के साथ जीवित रखा है। उनकी पत्नी सुधा नेगी और उनके बच्चे आज भी उनकी शिक्षाओं और गीतों को प्रसारित कर रहे हैं: वीरेंद्र नेगी: राही जी के सबसे बड़े पुत्र, जो एक कुशल गायक और संगीतकार हैं। राही जी ने अपनी अधिकांश पारंपरिक विद्या और शोध कार्य उन्हें विरासत में दिया है। राकेश भारद्वाज: राही जी के सबसे छोटे पुत्र, जो प्रसिद्ध रॉक बैंड 'यूफोरिया' (Euphoria) के सदस्य हैं। वे अपने पिता के गीतों को आधुनिक संगीत के साथ मिलाकर नई पीढ़ी तक पहुँचा रहे हैं। महेंद्र और सतीश नेगी: ये भी संगीत उत्पादन और वादन के माध्यम से पारिवारिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। निधि ठाकुर: उनकी पुत्री, जो एक शास्त्रीय और लोक गायिका के रूप में सक्रिय हैं। राही जी के परिवार ने 'सी.एस. राही फाउंडेशन' (C.S. Rahi Foundation) की स्थापना की है, जो उनके द्वारा संकलित 2,500 गीतों को डिजिटल रूप से संरक्षित करने और उन्हें दुनिया के सामने लाने का कार्य कर रहा है।

चन्द्र सिंह राही जी का योगदान केवल इस बात में नहीं है कि उन्होंने सुंदर गीत गाए, बल्कि इस बात में है कि उन्होंने एक मरती हुई संस्कृति को अपनी सांसों से सींचा। उन्होंने उस दौर में लोक संगीत की मशाल थामी जब लोग अपनी जड़ों को भूल रहे थे। उन्होंने लोक संगीत को मनोरंजन की वस्तु से उठाकर शोध और अकादमिक चर्चा का विषय बनाया। उनका जीवन एक 'राही' की ही तरह रहा, जो हमेशा अपनी संस्कृति के दुर्गम रास्तों पर चलता रहा, गीतों के फूल बटोरता रहा और उन्हें संगीत की माला में पिरोता रहा। आज जब हम "फ्वा बाघा रे" या "चैता की चैत्वाली" सुनते हैं, तो उसमें केवल एक कलाकार की आवाज नहीं, बल्कि पूरे उत्तराखंड की आत्मा की गूँज सुनाई देती है। चन्द्र सिंह राही का कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक 'प्रदीप्ति स्तंभ' (Lighthouse) का कार्य करेगा। वे भविष्य के लोक संगीतकारों और शोधकर्ताओं के लिए एक अनिवार्य संदर्भ बिंदु बने रहेंगे। उनका समर्पण हमें सिखाता है कि अपनी जड़ों से जुड़े रहकर ही हम वैश्विक ऊंचाइयों को छू सकते हैं।

चन्द्र सिंह राही जी का नाम उत्तराखंड के सांस्कृतिक इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जा चुका है। वे एक ऐसे 'ऋषि' थे जिन्होंने अपने संगीत के माध्यम से हिमालय की दिव्यता को शब्दों और स्वरों में ढाला। उनका योगदान तब तक जीवित रहेगा जब तक हिमालय की चोटियों पर बर्फ चमकती रहेगी और इसकी नदियों में लोकगीतों की धारा प्रवाहित होती रहेगी।

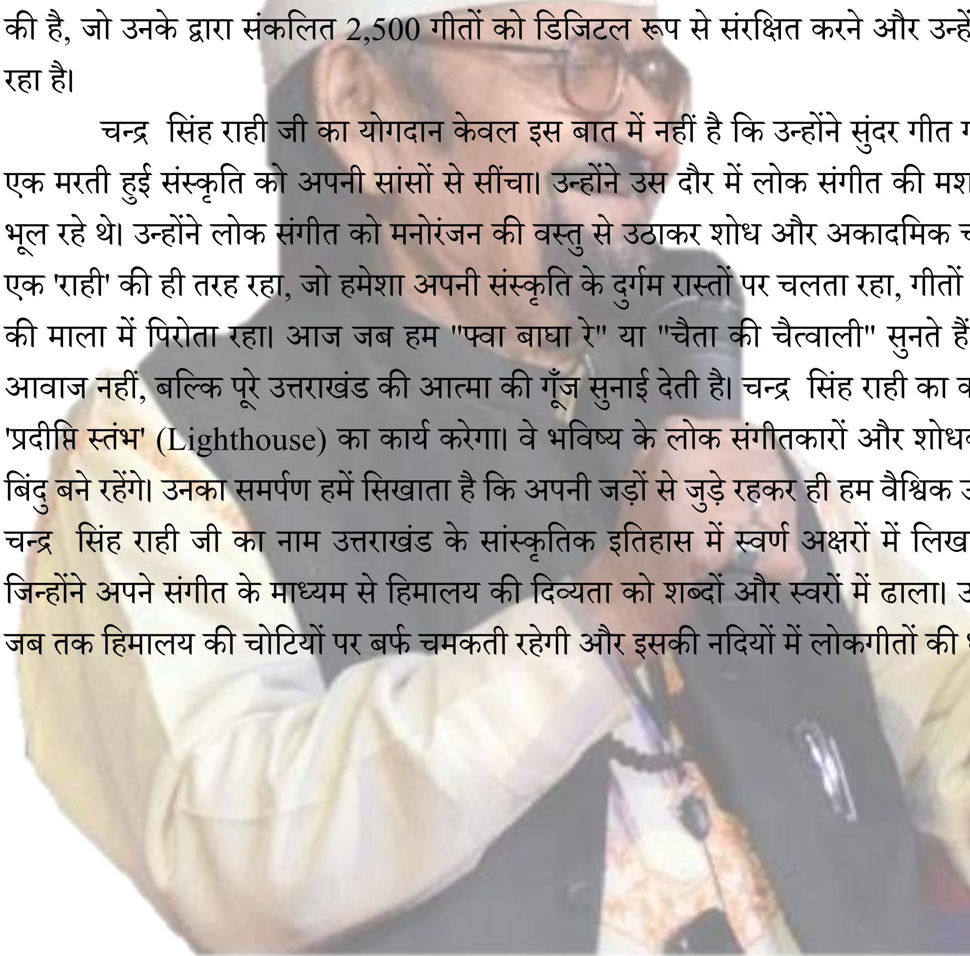

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग

मार्च माह के महत्वपूर्ण दिवस

मार्च माह के महत्वपूर्ण दिवस

क्र० सं०	तिथि	दिवस का नाम	विवरण
01	1 मार्च	भेदभाव-मुक्त दिवस या शून्य भेदभाव दिवस	भेदभाव-मुक्त दिवस हर साल 1 मार्च को विश्व स्तर पर मनाया जाता है ताकि हर कोई उम्र, लिंग, जाति, त्वचा के रंग, कद, वजन आदि की परवाह किए बिना गरिमापूर्ण जीवन जी सके। भेदभाव-मुक्त दिवस का प्रतीक तितली है। सबसे पहले, 1 मार्च 2014 को संयुक्त राष्ट्र ने इस दिवस को मनाया था।
		विश्व प्रशंसा दिवस	विश्व प्रशंसा दिवस प्रतिवर्ष 1 मार्च को मनाया जाता है। यह एक वैश्विक उत्सव है जो सच्ची प्रशंसा के माध्यम से दयालुता को बढ़ावा देने और मनोबल बढ़ाने के लिए समर्पित है।
		विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस	विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस प्रत्येक वर्ष 1 मार्च को मनाया जाता है ताकि विश्व की जनता का ध्यान नागरिक सुरक्षा के महत्व की ओर आकर्षित किया जा सके और आपदाओं से लड़ने के लिए जिम्मेदार सभी सेवाओं के प्रयासों, बलिदानों और उपलब्धियों को श्रद्धांजलि अर्पित की जा सके। अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा संगठन (आईसीडीओ) ने 1990 में इस दिवस को मनाने का निर्णय लिया था।
02	3 मार्च	विश्व वन्यजीव दिवस	यह दिवस 3 मार्च को विश्व स्तर पर मनाया जाता है और सतत विकास लक्ष्य- 12, यानी जलहीन जीवन, से निकटता से जुड़ा हुआ है। यह लक्ष्य समुद्री प्रजातियों पर केंद्रित है और हमारे दैनिक जीवन में समुद्री वन्यजीवों से जुड़ी समस्याओं और महत्वपूर्ण मुद्दों को उजागर करता है। विश्व वन्यजीव दिवस 2023 का विषय है "पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली के लिए प्रमुख प्रजातियों का पुनरुद्धार"।
		विश्व श्रवण दिवस	हर साल 3 मार्च को मनाया जाता है ताकि बहरेपन की रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके और दुनिया भर में सुनने की क्षमता को बढ़ावा दिया जा सके।
03	4 मार्च	राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस	भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद द्वारा 4 मार्च को राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस मनाया जाता है। यह दिन लोगों को आर्थिक नुकसान, स्वास्थ्य समस्याओं और जीवन में आने वाली अन्य समस्याओं से सुरक्षित रखने के लिए मनाया जाता है।
		राष्ट्रीय व्याकरण दिवस	हर साल 4 मार्च को राष्ट्रीय व्याकरण दिवस मनाया जाता है। इस दिवस की स्थापना 2008 में सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ गुड ग्रामर की संस्थापक मार्था ब्रोकनब्रॉ ने की थी। यह दिन अंग्रेजी भाषा की विशिष्टताओं का जश्न मनाता है, जिसमें सामान्य व्याकरण संबंधी गलतियों का अध्ययन करना, अपने पत्रों की प्रूफरीडिंग करना और भाषाई बारीकियों को समझना शामिल है।
04	8 मार्च	अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	यह दिवस हर साल 8 मार्च को विश्व स्तर पर महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए मनाया जाता है। साथ ही, यह लैंगिक समानता को बढ़ावा देने का एक माध्यम भी है। बैंगनी रंग अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं का प्रतीक है। बैंगनी, हरे और सफेद रंगों का संयोजन महिलाओं की समानता का प्रतीक है, जिसकी शुरुआत 1908 में ब्रिटेन में महिला सामाजिक और राजनीतिक संघ से हुई थी।

05	11 मार्च	धूम्रपान निषेध दिवस	धूम्रपान निषेध दिवस हर साल मार्च के दूसरे बुधवार को मनाया जाता है ताकि धूम्रपान के माध्यम से तंबाकू के हानिकारक स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके और दुनिया भर के लोगों को धूम्रपान छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।
06	12 मार्च	मॉरीशस दिवस	मॉरीशस दिवस प्रतिवर्ष 12 मार्च को देश के इतिहास में घटी दो महत्वपूर्ण घटनाओं, यानी 1968 में ब्रिटेन से स्वतंत्रता और 1992 में गणतंत्र बनने की याद में मनाया जाता है।
07	13 मार्च	विश्व नींद दिवस	विश्व नींद दिवस प्रत्येक वर्ष वसंत विषुव से पहले वाले शुक्रवार को मनाया जाता है। इस वर्ष यह 13 मार्च को मनाया जाएगा। यह नींद से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों, जिनमें चिकित्सा, शिक्षा, सामाजिक पहलू और वाहन चलाना शामिल हैं, पर कार्रवाई करने का आह्वान है।
08	14 मार्च	पाई दिवस	14 मार्च को विश्व भर में पाई दिवस मनाया जाता है। पाई गणित में एक स्थिरांक को दर्शाने वाला प्रतीक है। यह वृत्त की परिधि और उसके व्यास का अनुपात है, जो लगभग 3.14 होता है।
		नदियों के संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दिवस	हर साल 14 मार्च को नदियों के संरक्षण के लिए आवाज़ उठाने और नदियों से संबंधित नीतियों में सुधार की मांग करने के लिए नदियों के संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है। यह दिन नदियों को मंडरा रहे खतरों के बारे में एक-दूसरे को जागरूक करने और उनके समाधान खोजने का दिन है।
09	15 मार्च	विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस	उपभोक्ता अधिकारों और आवश्यकताओं के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल 15 मार्च को यह दिवस मनाया जाता है। यह दिन सभी उपभोक्ताओं के अधिकारों के सम्मान और संरक्षण की मांग करने और सामाजिक अन्याय के खिलाफ विरोध करने का अवसर है।
10	16 मार्च	राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस	हर साल 16 मार्च को भारत में राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस मनाया जाता है, जिसे राष्ट्रीय प्रतिरक्षण दिवस (आईएमडी) के नाम से भी जाना जाता है। यह दिवस पहली बार 16 मार्च 1995 को मनाया गया था, जब पोलियो के मौखिक टीके की पहली खुराक दी गई थी। इसका उद्देश्य पृथ्वी से पोलियो के उन्मूलन के लिए जागरूकता बढ़ाना है।
11	18 मार्च	आयुध कारखाना दिवस	18 मार्च को पूरे भारत में प्रतिवर्ष आयुध कारखाना दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर आयुध कारखाना, फील्ड गन कारखाना, लघु शस्त्र कारखाना, आयुध पैराशूट कारखाना और आयुध उपकरण कारखाना इस दिवस को मनाते हैं
12	20 मार्च	अन्तर्राष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस	अन्तर्राष्ट्रीय खुशी दिवस हर साल 20 मार्च को मनाया जाता है। 2013 से संयुक्त राष्ट्र इस दिन को विश्वभर के लोगों के जीवन में खुशी के महत्व को पहचानने के लिए मनाता आ रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने 2015 में गरीबी को समाप्त करने असमानता को कम करने और हमारे ग्रह की रक्षा करने के लिए 17 सतत विकास लक्ष्य शुरू किए, जो खुशहाली और कल्याण के तीन प्रमुख पहलू हैं।
		विश्व गौरैया दिवस	गौरैया संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए 20 मार्च को विश्वव्यापी स्तर पर विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है। यह दिन मनुष्य और गौरैया के बीच के रिश्ते का भी जश्न मनाता है; गौरैया के प्रति प्रेम फैलाता है, हमारे जीवन में उनके महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाता है।

12	20 मार्च	नवरोज़	दुनिया भर में और भारत में कई समुदायों द्वारा ईरानी कैलेंडर के अनुसार 'जमशेदी नवरोज' वसंत ऋतु के आगमन पर 20 मार्च को मनाया जाता है।
13	21 मार्च	विश्व वानिकी दिवस या अन्तर्राष्ट्रीय वन दिवस	21 मार्च को विश्व वानिकी दिवस या अन्तर्राष्ट्रीय वन दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है ताकि पृथ्वी पर जीवन चक्र को संतुलित करने में वनों के महत्व, उपयोगिता और योगदान के बारे में जन जागरूकता बढ़ाई जा सके। 1971 में यूरोपीय कृषि परिसंघ की 23वीं महासभा में विश्व वानिकी दिवस की स्थापना की गई थी।
		विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस	विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस हर साल 21 मार्च को मनाया जाता है। डाउन सिंड्रोम मानव में होने वाली एक प्राकृतिक गुणसूत्र संबंधी विसंगति है, जिसके परिणामस्वरूप सीखने की शैली, शारीरिक विशेषताओं या स्वास्थ्य पर अलग-अलग प्रभाव पड़ते हैं। महासभा ने दिसंबर 2011 में 21 मार्च को विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस घोषित किया था।
		विश्व कविता दिवस	हर साल 21 मार्च को विश्व कविता दिवस मनाया जाता है, ताकि कविता की उस अनूठी क्षमता को पहचाना जा सके जो मानव मन की रचनात्मक भावना को व्यक्त करती है। इस दिवस को 21 मार्च को मनाने का निर्णय 1999 में पेरिस में यूनेस्को के 30वें सत्र के दौरान लिया गया था।
14	22 मार्च	बिहार दिवस	बिहार दिवस, बिहार राज्य की स्थापना की याद में 22 मार्च को मनाया जाता है। यह राज्य में सार्वजनिक अवकाश है। इसी दिन, 1912 में अंग्रेजों ने बंगाल से बिहार राज्य को अलग किया था।
		विश्व जल दिवस	हर साल 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है ताकि मीठे पानी के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके और मीठे पानी के संसाधनों के सतत प्रबंधन की वकालत की जा सके। इसे मनाने की सिफारिश 1992 में रियो डी जेनेरियो में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED) में की गई थी। और फिर, 1993 में पहला विश्व जल दिवस मनाया गया।
15	23 मार्च	विश्व मौसम विज्ञान दिवस	विश्व मौसम विज्ञान दिवस हर साल 23 मार्च को मनाया जाता है ताकि समाज की सुरक्षा और कल्याण के लिए मौसम और जलवायु की ओर ध्यान आकर्षित किया जा सके। 23 मार्च 1950 को विश्व मौसम विज्ञान संगठन अस्तित्व में आया। विश्व मौसम विज्ञान दिवस 2023 का विषय है "प्रारंभिक चेतावनी और प्रारंभिक कार्रवाई।
		शहीद दिवस	भारत में शहीद दिवस कई तिथियों पर मनाया जाता है। 23 मार्च को उस दिन के रूप में याद किया जाता है जब तीन वीर स्वतंत्रता सेनानियों, भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर को अंग्रेजों द्वारा फांसी दी गई थी। इसके अलावा, महात्मा गांधी की स्मृति में 30 जनवरी को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।
16	24 मार्च	विश्व टीबी दिवस	विश्व टीबी दिवस हर साल 24 मार्च को मनाया जाता है, उस तारीख की याद में जब डॉ. रॉबर्ट कोच ने 1882 में माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक जीवाणु की खोज की घोषणा की थी, जो टीबी का कारण बनता है। यह दिन लोगों को टीबी और दुनिया भर में इसके प्रभाव के बारे में शिक्षित करने के लिए मनाया जाता है।
17	25 मार्च	अजन्मे बच्चे का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस	यह दिवस 25 मार्च को मनाया जाता है। यह अजन्मे भ्रूणों की वार्षिक स्मृति है और इसे गर्भपात के विरोध दिवस के रूप में मनाया जाता है।

18	27 मार्च	विश्व रंगमंच दिवस	विश्व रंगमंच दिवस 1962 से प्रतिवर्ष 27 मार्च को विश्व भर में मनाया जाता है ताकि "नाट्यकला" कला के महत्व को बढ़ाया जा सके और उन सरकारों, राजनेताओं और संस्थानों के लिए एक जागृति का आह्वान किया जा सके जिन्होंने अभी तक लोगों के लिए इसके मूल्य को नहीं पहचाना है और न ही आर्थिक विकास के लिए इसकी क्षमता को महसूस किया है।
19	30 मार्च	राजस्थान दिवस	राजस्थान राज्य के गठन की याद में 30 मार्च को पूरे राज्य में उत्सव मनाया जाता है। 1949 में इसी दिन, जोधपुर, जयपुर, बीकानेर और जैसलमेर नामक चार राज्य संयुक्त राजस्थान राज्य में शामिल हुए और यह क्षेत्र बृहत्तर राजस्थान के नाम से जाना जाने लगा।
20	31 मार्च	एफिल टावर दिवस	हर साल 31 मार्च को एफिल टावर दिवस मनाया जाता है, जो टावर के उद्घाटन की याद में मनाया जाता है। 1889 में इसी दिन इस गगनचुंबी इमारत को जनता के सामने पेश किया गया था। और 134 साल बाद भी, यह स्मारक हर दिन हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता रहता है।
		महावीर जयंती	31 मार्च को महावीर जयंती मनाई जाती है, जो जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की जयंती का प्रतीक है। इस दिन प्रार्थना, जुलूस और परोपकारी कार्यों के माध्यम से शांति, अहिंसा और करुणा के मूल्यों को बढ़ावा दिया जाता है।

चित्र-दीर्घा

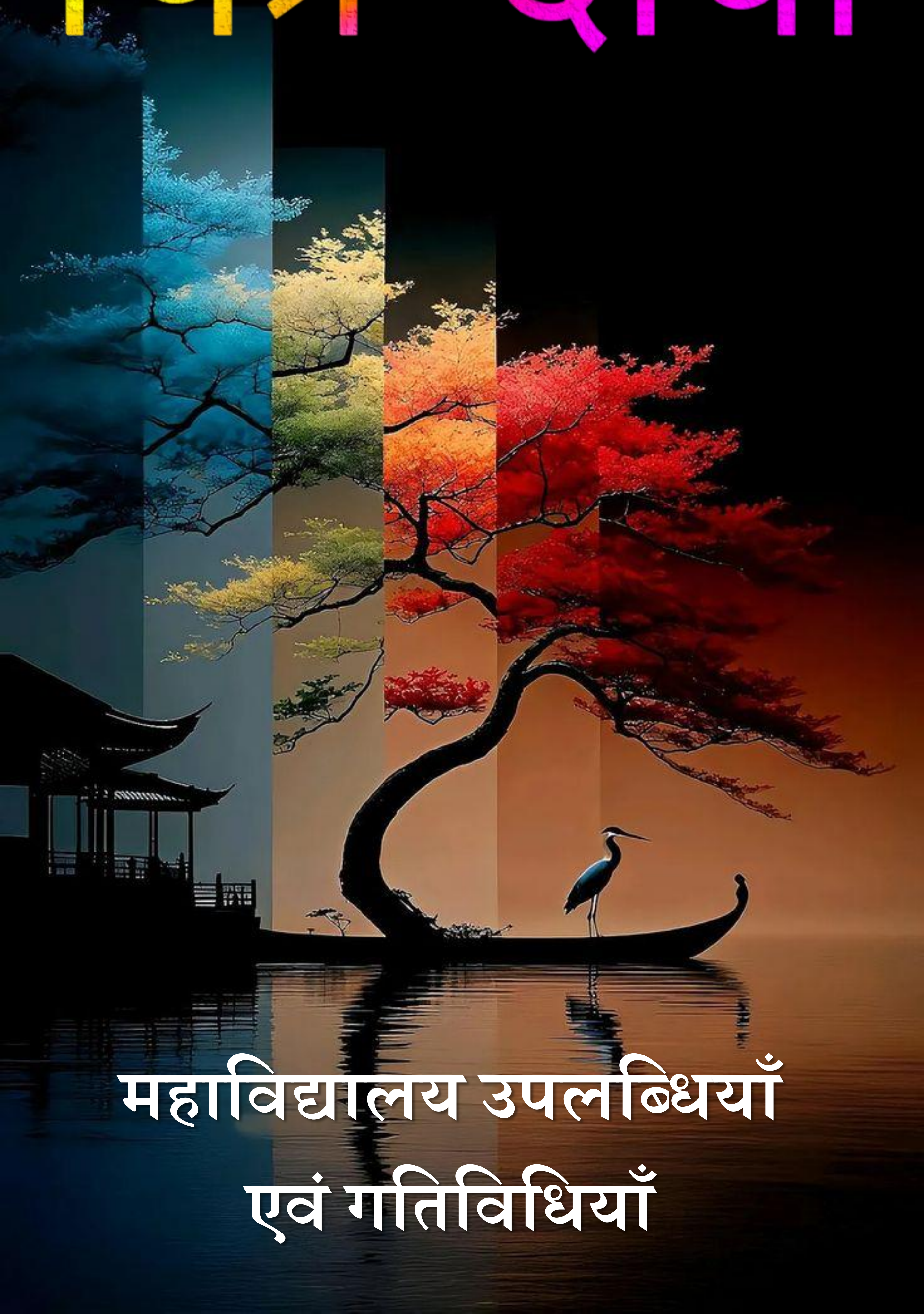

महाविद्यालय उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ

वार्षिकोत्सव

दिनाँक: 17.03.2026

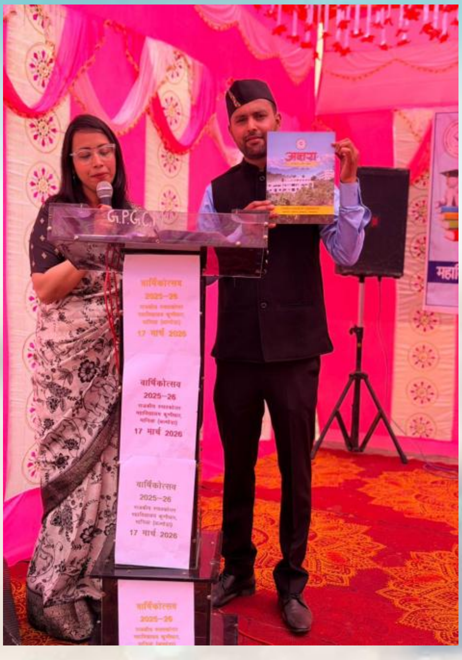

दिनाँक 17.03.2026 को राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुणीधार, मानिला (अल्मोड़ा) में धूमधाम से वार्षिकोत्सव मनाया गया। वार्षिकोत्सव में विद्यार्थियों की प्रतिभा, सृजनशीलता तथा सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करने का महत्वपूर्ण अवसर मिला।

पत्रिका विमोचन

दिनाँक: 17.03.2026

दिनाँक 17.03.2026 को वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर पत्रिका डॉ. भावना अग्रवाल, डॉ. कविंद्र भट्ट एवं डॉ. रविन्द्र मिश्र के संयुक्त सम्पादन के फलस्वरूप महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अक्षरा' का विमोचन किया गया। पत्रिका में विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों की रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ जैसे लेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण एवं शोधपरक आलेख सम्मिलित किए गए हैं।

NSS विशेष शिविर

दिनाँक: 23.03.2026 से 29.03.2026

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार, मानिला (अल्मोड़ा) में एन.एस.एस. प्रभारी डॉ० अंजु निगम के कुशल नेतृत्व में दिनाँक 23.03.2026 से 29.03.2026 तक ग्राम कुणीधार सात-दिवसीय विशेष शिविर का भव्य आयोजन किया गया। समस्त स्वयंसेवियों द्वारा शिविर में बढ़-चढ़कर कर प्रतिभाग कर नियमित अनुशासन एवं सेवा भाव के गुर सीखे।

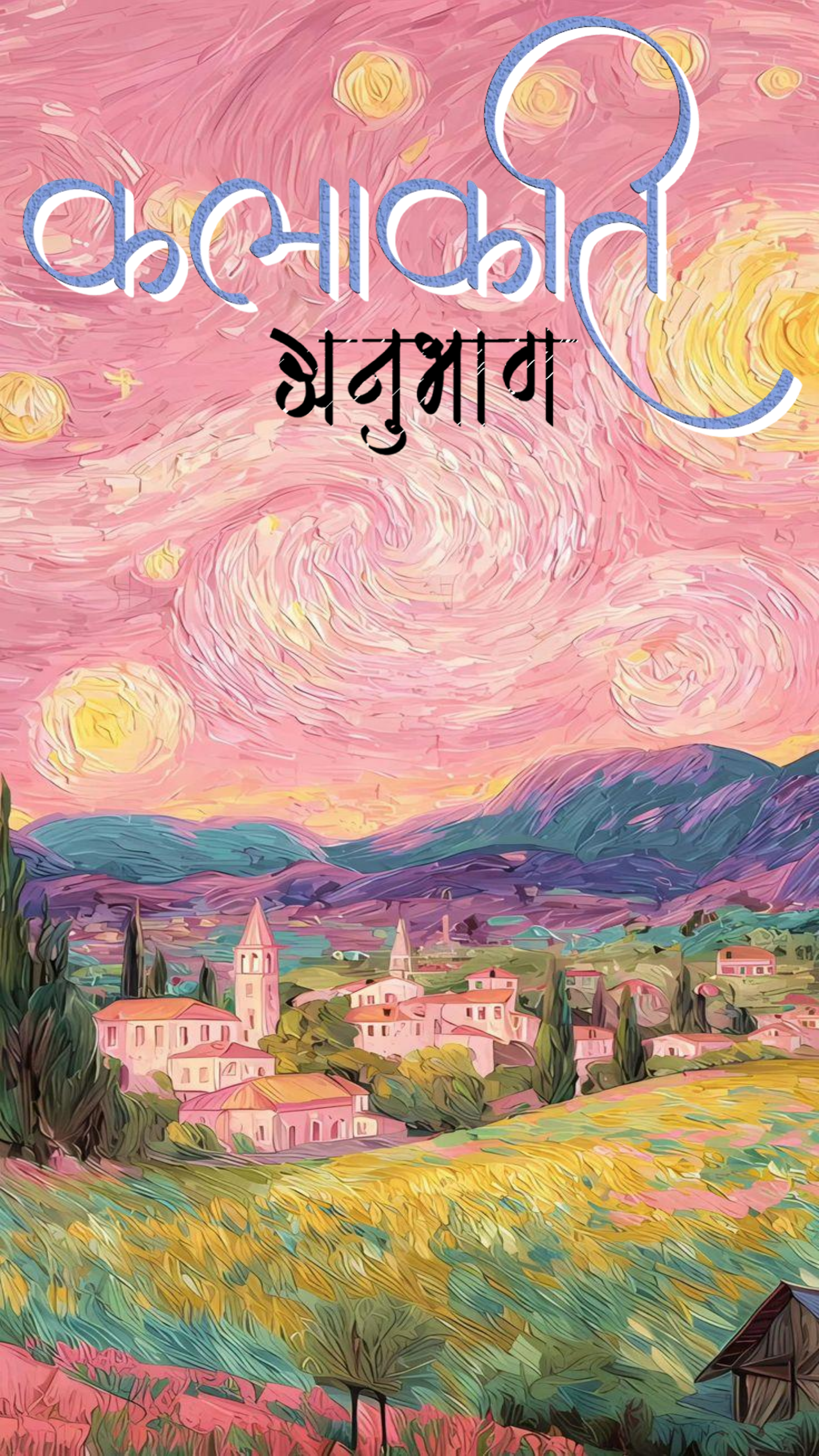
কলাকলি
অনুভাগ

कलाकीर्ति

चित्रण: डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

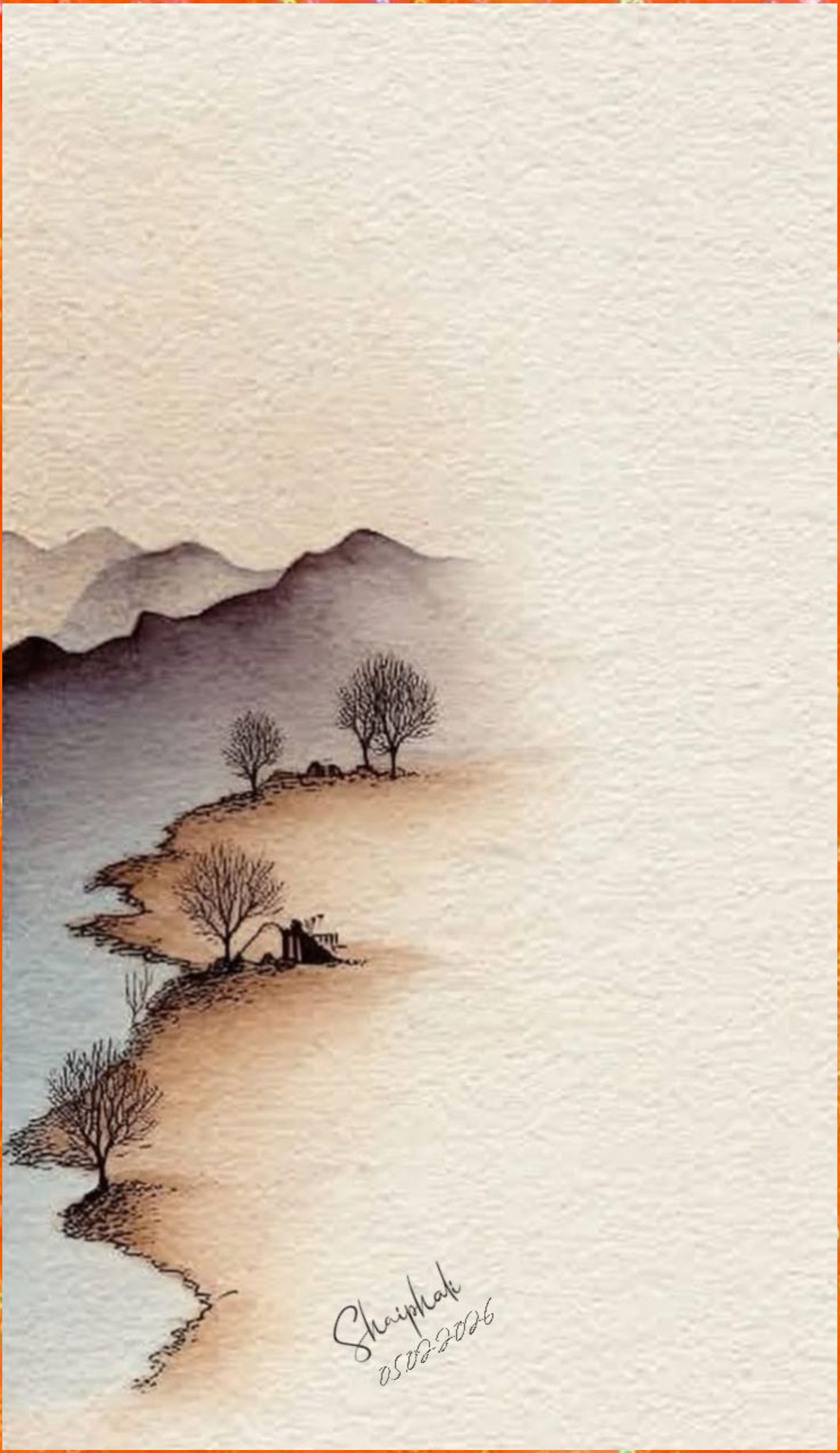

चित्रण: डॉ० शैफाली सक्सेना
अस्सिटेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

कुछ अनुशंसित पुस्तकें

कुछ अनुशंसित पुस्तकें

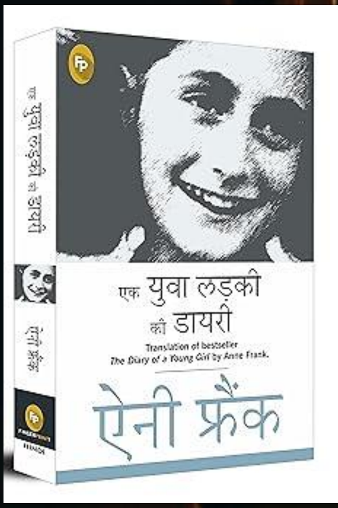

एक युवा लड़की की डायरी

लेखक: ऐनी फ्रैंक

ऐनी फ्रैंक की डायरी किसी परिचय की मोहताज नहीं है। मानव इतिहास के सबसे भयावह दौर में फंसी एक युवती की यह खूबसूरती से लिखी गई आत्मकथा, सबसे विपरीत परिस्थितियों में भी दृढ़ रहने और जीवित रहने की अदम्य मानवीय इच्छाशक्ति का प्रमाण है। जहाँ ऐनी फ्रैंक स्वयं द्वितीय विश्व युद्ध की शिकार हो गईं, वहीं उनकी डायरी में हर जगह भरे उनके शब्द युगों-युगों तक उनकी कहानी और उनकी स्मृति को जीवित रखने के लिए मौजूद रहे।

माँ

लेखक: मैक्सिम गोर्की

मैक्सिम गोर्की द्वारा रचित **'माँ'** (1906) एक कालजयी रूसी उपन्यास है, जो एक साधारण मां (पेलागेया व्लासोवा) के क्रांतिकारी बनने की कहानी है। यह समाजवादी यथार्थवाद का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो सामाजिक अन्याय और रूस के श्रमिक वर्ग के संघर्षों को उजागर करता है। उपन्यास का मुख्य विषय दमन और अत्याचार के बीच मां के मातृत्व, निडरता और जागृति का चित्रण है।

सूरज का सातवाँ घोडा

लेखक: धर्मवीर भारती

इसमें हमारे निम्न मध्य वर्ग के जीवन का सही-सही चित्रण है। यह सत्य है कि वह चित्र 'प्रीतिकर या सुखद नहीं है; क्योंकि उस समाज का जीवन वैसा नहीं है और भारती ने यथाशक्य उसका सच्चा चित्र उतारना चाहा है। पर वह असुन्दर या अप्रीतिकर भी नहीं है, क्योंकि वह मृत नहीं है, न मृत्यु-पूजक ही है। उसमें दो चीजें हैं जो उसे इस ख़तरे से उबारती हैं- एक तो उसका हास्य, दूसरे एक अदम्य और निष्ठामयी आशा ।' उपन्यास की शैली अपने ढंग की अनूठी है। इस पुस्तक के माध्यम से हिन्दी में एक नयी कथाशैली का आविर्भाव हुआ। इसकी कथावस्तु कई कहानियों में गुम्फित है, किन्तु इसमें 'एक कहानी में अनेक कहानियाँ नहीं, अनेक कहानियों में एक कहानी है।' प्रस्तुत है सूरज का सातवाँ घोड़ा का नवीनतम संस्करण नयी साज-सज्जा के साथ ।

देश दुनिया
के कुछ
रोचक तथ्य

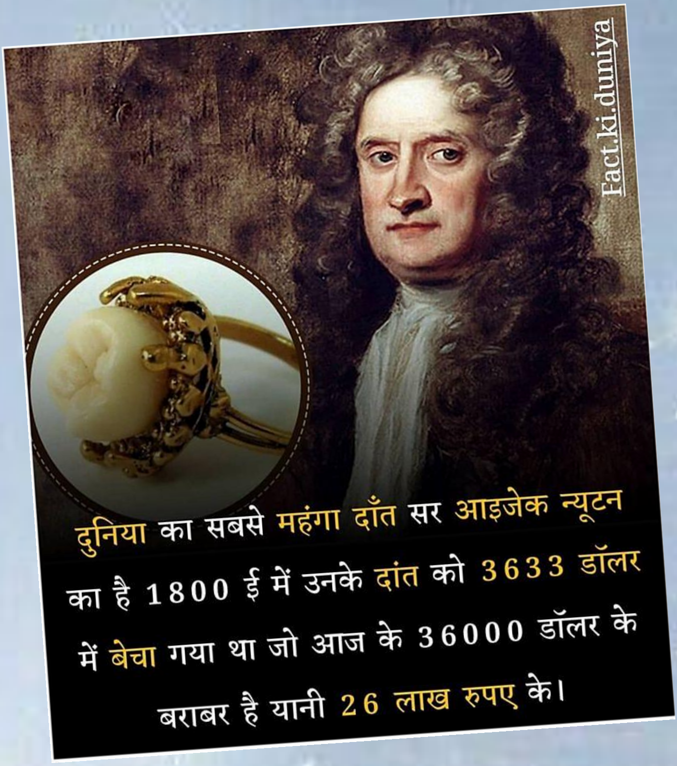
Fact.ki.duniya
दुनिया का सबसे महंगा दाँत सर आइजेक न्यूटन का है 1800 ई में उनके दांत को 3633 डॉलर में बेचा गया था जो आज के 36000 डॉलर के बराबर है यानी 26 लाख रुपए के।

DREAM11 IPL FINAL
2020
आईपीएल मैच में टॉस के लिए इस्तेमाल होने वाले हर सिक्के को स्पेशली बनवाया जाता है। जिसमे कॉपर और निकल मिला होता है। इसे बनवाने में 2000 से 3000 का खर्चा आता है।

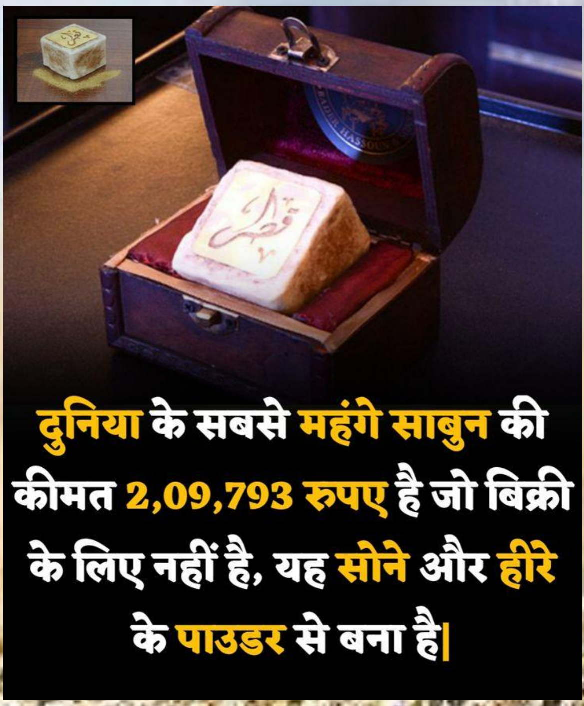
दुनिया के सबसे महंगे साबुन की कीमत 2,09,793 रुपए है जो बिक्री के लिए नहीं है, यह सोने और हीरे के पाउडर से बना है।

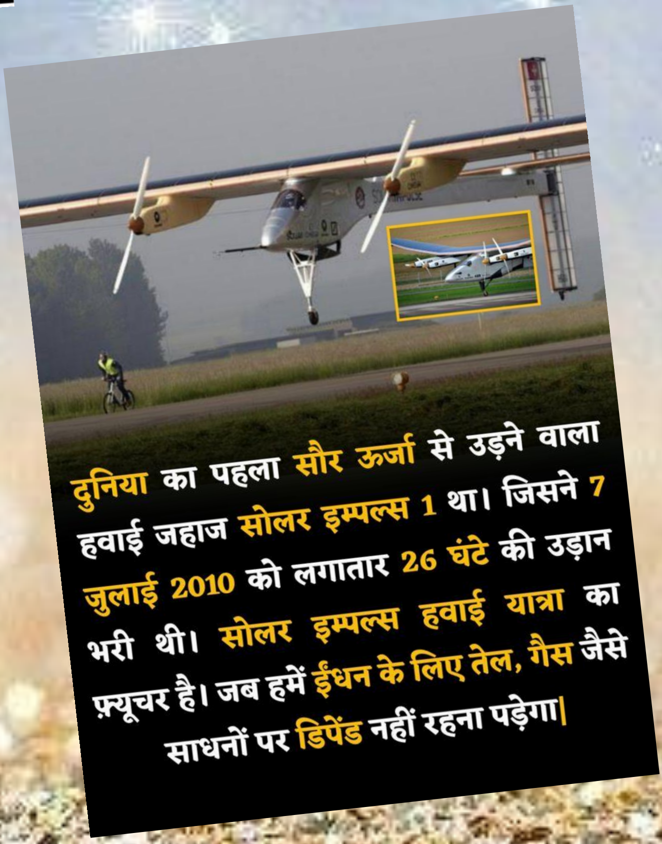
दुनिया का पहला सौर ऊर्जा से उड़ने वाला हवाई जहाज सोलर इम्पल्स 1 था। जिसने 7 जुलाई 2010 को लगातार 26 घंटे की उड़ान भरी थी। सोलर इम्पल्स हवाई यात्रा का फ़्यूचर है। जब हमें ईंधन के लिए तेल, गैस जैसे साधनों पर डिपेंड नहीं रहना पड़ेगा।

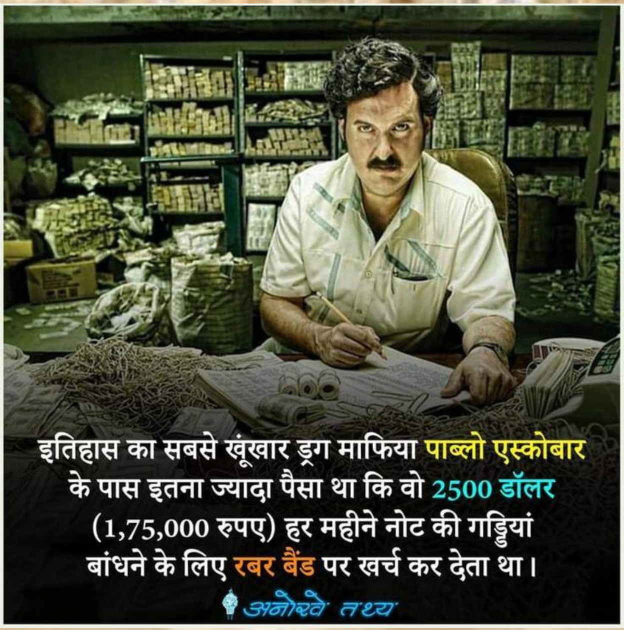
इतिहास का सबसे खूंखार ड्रग माफिया पाब्लो एस्कोबार के पास इतना ज्यादा पैसा था कि वो 2500 डॉलर (1,75,000 रुपए) हर महीने नोट की गड्डियां बांधने के लिए रबर बैंड पर खर्च कर देता था।
अनोखे तथ्य

Nasa द्वारा सूर्य के Research के लिए भेजा गया Parker Solar Probe इंसानों द्वारा बनाई गई सबसे तेज चलने वाली वस्तु हैं जिसकी स्पीड 6,92,000 किलोमीटर प्रति घंटा हैं। इतनी स्पीड से कश्मीर से कन्याकुमारी सिर्फ 18 सेकंड में पहुंच सकते हैं।

2017 में, एडिडास ने Recycle कर समुद्री प्लास्टिक से बने 1 मिलियन से अधिक जोड़े जूते बेचे थे, जिसमे हर जोड़ी जूतें को बना ने में 11 प्लास्टिक की बोतलें लगी थीं।

KNOWLEDGEOFPEOPLE

ऑस्ट्रेलियाई कंपनी ' टॉयलेट पेपर मैन ' ने 22 कैरेट सोने से बना टॉयलेट पेपर रोल बेच रही है जिसकी कीमत लगभग 8.2 करोड़ रूपए है। यह सोने का टॉयलेट पेपर दुनिया की सबसे महंगी बेकार वस्तुओ में से एक है।

आपको जानकर हैरानी होगी कि इंटरनेट के डेटा का लगभग 97% डेटा सेटेलाइट के जरिए नहीं बल्कि समुद्रों में बिछे हुए केबल के जरिए ट्रांसफर होता है।

@gk_everyday

FOLLOW FOR MORE/@THEINDIAFACTS

John Harrison को सिर्फ Ice Cream टेस्ट करने के लिए करोड़ो की सेलेरी दी जाती हैं यह अमेरिका की एक Ice Cream कम्पनी में काम करते हैं और आज दिन तक इन्होंने जिस Ice Cream का test करके यह बताया हैं कि यह Market में नहीं चलेगी वो सही हुआ हैं इसीलिए इन्होंने अपनी जीभ का 7 करोड़ का Insurance करा रखा हैं।

बिच्छू के 3.7 लीटर जहर की कीमत 266 करोड़ होती है! बिच्छू का ज़हर पृथ्वी पर पाया जाने वाला सबसे महँगा लिक्विड है.!

चेन्नई के महाबलीपुरम मे स्थित कृष्णा की बटर बॉल के नाम से प्रसिद्ध एक विशालकाय रहस्यमय पत्थर है जो की 20 फीट ऊंचा और 5 मीटर चौड़ा है। यह पत्थर पीछले 1200 सालों से एक ढलान वाली पहाड़ी पर 45° के कोण पर बिना लुढ़के टिका हुआ है। इस पत्थर के गोले को 7 हाथियों से खिचवाने पर भी नहीं हिलाया जा सका है।

रोजगार
समाचार

देश में 2026 की आगामी परीक्षायें

विशिष्ट आगामी भर्ती (2026)

- **सेंटर फॉर बायोमेडिकल रिसर्च (CBMR):** रिसर्च एसोसिएट फेलो के पदों पर संविदा आधारित भर्ती। आवेदन की अंतिम तिथि: **27/04/2026**।
- **सैनिक स्कूल:** ट्रेंड ग्रेजुएट टीचर (TGT) गणित और हिंदी के पदों पर भर्ती। आवेदन की अंतिम तिथि: **12-13 अप्रैल 2026**।
- **बैंक नोट पेपर मिल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड:** असिस्टेंट मैनेजर (फाइनेंस एंड अकाउंट्स) के पदों पर भर्ती। आवेदन की अंतिम तिथि: **11/04/2026**।

अधिक विवरण कैसे प्राप्त करें

- **रोजगार समाचार:** रोजगार समाचार आधिकारिक अधिसूचनाओं और उनकी तिथियों के लिए एक प्राथमिक स्रोत है।
- **परीक्षा पोर्टल:** करियर 360 और करियर पावरजैसी प्रतिष्ठित वेबसाइटें भी सरकारी नौकरियों के बारे में अद्यतन जानकारी प्रदान करती हैं।

उत्तराखण्ड में 2026 की आगामी परीक्षायें

उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

- **NHM उत्तराखंड (राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन):** सीनियर कंसल्टेंट, पब्लिक हेल्थ एक्सपर्ट और स्टेट प्रोजेक्ट मैनेजर जैसे पदों के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। **अंतिम तिथि:** 15 अप्रैल 2026
- **श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय (SDSUV):** प्रोफेसर और असिस्टेंट लाइब्रेरियन सहित कुल 64 पदों पर भर्ती। **अंतिम तिथि:** 10 अप्रैल 2026
- **IIT रुड़की:** जूनियर रिसर्च फेलो (JRF), प्रोजेक्ट असिस्टेंट और प्रोजेक्ट एसोसिएट के पदों पर भर्तियां निकली हैं। **अंतिम तिथि:** पदों के अनुसार 10 अप्रैल से 24 अप्रैल 2026 तक

अपडेट कैसे रहें

सबसे सटीक और विस्तृत जानकारी के लिए, आधिकारिक वेबसाइटों पर जाना सबसे अच्छा है:

- यूकेपीएससी: psc.uk.gov.in
- यूकेएसएसएससी: sssc.uk.gov.in

“हिलमा चांदी कु बटना”

हिलमा चाँदी कु बटना
रेंदा दिल मा तुम्हरी रटणा

पान खायी सुपारी खायी हामल बीड़ी को
पान खायी सुपारी खायी हामल बीड़ी को
कोच तेरु कोच मेरु धरा धपि पीढ़ी को
कोच तेरु कोच मेरु धरा धपि पीढ़ी को

हिलमा चाँदी कु बटना
रेंदा दिल मा तुम्हरी रटणा

झगुली झुमरा भगी झगुली झुमरा
झगुली झुमरा भगी झगुली झुमरा
तेरी मेरी माया भगी जुड़ी सी सुमारा
तेरी मेरी माया भगी जुड़ी सी सुमारा

अबे हिलमा चाँदी कु बटना
रेंदा दिल मा तुम्हरी रटणा

तेल्या ताल घोडा लुलू मेला ताल दुबा
तेल्या ताल घोडा लुलू मेला ताल दुबा
माया कु मुनर भगी कसके होलु खुबा
माया कु मुनर भगी कसके होलु खुबा

अबे हिलमा चाँदी कु बटना
रेंदा दिल मा तुम्हरी रटणा

घोटी जालु भंग भगी घोटी जालु भंगा
घोटी जालु भंग भगी घोटी जालु भंगा
दुई दिनकू हुंदु भगी जवानी कु रंग
दुई दिनकू हुंदु भगी जवानी कु रंग

अबे हिलमा चाँदी कु बटना
रेंदा दिल मा तुम्हरी रटणा
अबे हिलमा चाँदी कु बटना
रेंदा दिल मा तुम्हरी रटणा
ऊबे हिलमा चाँदी कु बटना
रेंदा दिल मा तुम्हरी रटणा

स्व० चंदर सिंह राही जी को शत-शत नमन!

“सा विद्या या विमुक्तये।”

कवर एवं पत्रिका डिजाईन: डॉ० शैफाली सक्सेना